ऑयल इंडिया लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम)
Oil India Limited
(A Government of India Enterprise)

छमाही हिंदी गृह पत्रिका

ऑयल किरण

अईल किৰण OIL KIRAN | 2021 | वर्ष 18 अंक 28 |

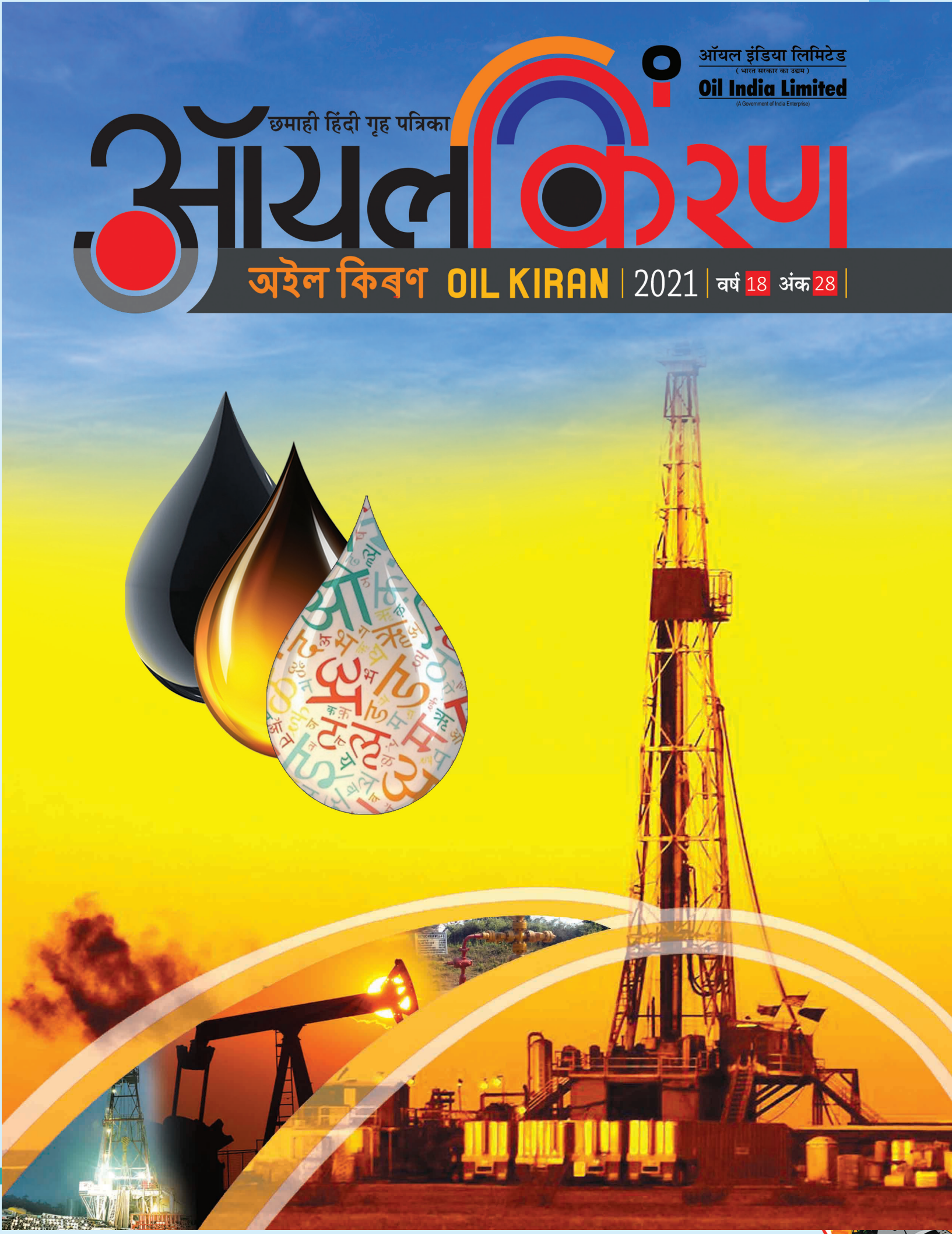

सम्पादकीय

ऑयल इंडिया लिमिटेड की गृह पत्रिका "ऑयल किरण" की गौरवशाली विकास यात्रा वर्ष 18 से सतत रूप से जारी है। इस छमाही गृह पत्रिका के अब तक 27 अंक प्रकाशित हो चुके हैं, जिसका श्रेय आप सभी को जाता है। परिणाम स्वरूप हम और जोश व उत्साह के साथ आगामी अंकों को और बेहतर बनाने के लिए दृढ़ संकल्पित हैं।

भाषा विचारों की सहज एवं सार्थक संवाहक है। भारत की राजभाषा हिंदी है और राजभाषा के रुप में हिंदी का विकास हमारी नैतिक जिम्मेदारी है। अपनी भाषा के प्रति प्रेम हमारे राष्ट्रप्रेम को भी मजबूत बनाता है। हमारा उपक्रम अपने मूल कार्य कच्चे तेल का उत्पादन एवं परिवहन में जिस प्रकार आगे बढ़ रहा है उसी प्रकार हमलोग राजभाषा के प्रचार-प्रसार में भी अग्रसर हैं। ऑयल के सभी कार्यालयों में राजभाषा के कार्यों को सुचारू व नियमित रूप से संचालित किया जा रहा है।

पिछला वर्ष संपूर्ण मानव जाति के लिए एक गंभीर चुनौतीपूर्ण समय रहा था। हालांकि समय के साथ धीरे-धीरे परिस्थितियों में सुधार हो रहा है। परंतु यह बड़े गौरव की बात है कि ऐसी संकटपूर्ण स्थिति में भी ऑयल इंडिया लिमिटेड द्वारा ऑनलाइन के माध्यम से ऑयल किरण का प्रकाशन करने में हमारे अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने अपना बहुमूल्य योगदान दिया है। राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को प्रोत्साहित करने के लिए पत्रिकाओं का प्रकाशन भी एक प्रमुख दायित्व है। ऑयल किरण न केवल उस दायित्व का निर्वाह करती है वरन ऑयल के सभी कार्यालयों में हिंदी संबंधी गतिविधियों के वृहद प्रचार हेतु एक औपचारिक मंच प्रदान करती है।

पत्रिका के प्रकाशन के क्रम में मुझे वरिष्ठ अधिकारियों का निरंतर मार्गदर्शन मिल रहा है। इस पत्रिका के प्रकाशन को यथार्थ रूप देने वाले सभी रचनाकारों का आभार व्यक्त करता हूं जिनके बिना यह कार्य संभव नहीं हो पाता। पत्रिका को अधिक उपयोगी बनाने के लिए आपके बहुमूल्य सुझावों की हमें सदैव प्रतीक्षा रहेगी।

हरेकृष्ण बर्मन
उप महाप्रबंधक(राजभाषा)
क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान

सलाहकार
श्री प्रशान्त बोरकाकोती, आवासी मुख्य कार्यपालक, क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान
श्री राजीव बरुआ, मुख्य महाप्रबंधक (मा. सं. एवं प्रशा.), क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान
श्री अरुणज्योति बरुवा, मुख्य महाप्रबंधक (प्रशासन), क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान
श्री त्रिदिब सैकिया, महाप्रबंधक (जन संपर्क), क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान

प्रधान सम्पादक
श्री हरेकृष्ण बर्मन, उप महाप्रबंधक (राजभाषा), क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान

संपादक मंडल
डॉ. रमणजी झा, उप महाप्रबंधक (राजभाषा), निगमित कार्यालय, नोएडा
डॉ. वी. एम. बरेजा, उप महाप्रबंधक (राजभाषा), पाइपलाइन मुख्यालय, गुवाहाटी
डॉ. शैलेश त्रिपाठी, वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी, राजस्थान क्षेत्र, जोधपुर
श्री दिगन्त डेका, हिन्दी अधिकारी, क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान

सम्पादन-सहयोगी
श्री दीपक प्रसाद, पर्यवेक्षण सहायक (इजी -IV), क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान
श्री विजय कुमार गुप्ता, पर्यवेक्षण सहायक (इजी-I) पीजी, क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान

संपादकीय कार्यालय :
राजभाषा अनुभाग, जन संपर्क विभाग
ऑयल इंडिया लिमिटेड, क्षेत्र मुख्यालय
डाकघर : दुलियाजान - 786602, जिला : डिब्रूगढ़ (असम)
ई-मेल : hindi_section@oilindia.in

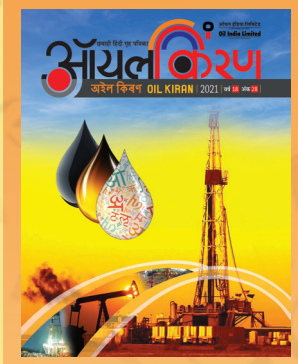

ऑयल किरण
वर्ष - 18, अंक - 28

आवरण विषय
ऑयल में राजभाषा

इस अंक में .....

मैं नारी हूँ	7
नैनो की बतिया	7
वो ट्रेन की यादें...	8
कर्म - धर्म - दंड - भेद	9
इश्क का परवाना	9
कम्प्रेसर मेंटेनेंस ! ऑयल के लिए, ऑयल के साथ !	10
उपलब्धि	11
नारी	11
उम्मीद	12
बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ	12
महामारी और गरीब	13
कोरोना की मार	13
मेक इन इंडिया	14
हे धरती माँ मुझे माफ करना	14
हमारे धैर्य की जीत होगी	14
राजभाषा हिंदी के समुचित विकास में 12 प्र की प्रभावशाली भूमिका	15
आज के युग में परिवार की अहमियत	19
मन की बात	20
बैंकों का निजीकरण - आशंकाएं एवं संभावनाएं	23
खाद्य संयोजन	25
भारत में हिंदी भाषा का भविष्य	27
जीवन संघर्ष	29
शेल गैस क्रांति	30
फन ओ' फैक्ट्स नाट्य लिपि	34
कारवार, कयाक में सवार	38
ऑयल राजभाषा समाचार	**40-45**

पत्रिका में प्रकाशित लेख, रचनाओं आदि में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। ऑयल राजभाषा अनुभाग तथा सम्पादक का इससे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

नि:शुल्क एवं आंतरिक विरतण हेतु प्रकाशित।

मुद्रक सैकिया प्रिंटर्स, दुलियाजान, दूरभाष - 9435038425

प्रशांत बोरकाकोती

ऑयल इंडिया लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम)
Oil India Limited
(A Government of India Enterprise)

आवासी मुख्य कार्यपालक
क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान
ऑयल इंडिया लिमिटेड

शुभकामना संदेश

ऑयल इंडिया लिमिटेड द्वारा हिंदी में प्रकाशित होने वाली गृह पत्रिका "ऑयल किरण" का निरंतर प्रकाशन होता आ रहा है, जो हमारे लिए हार्दिक प्रसन्नता का विषय है। "ऑयल किरण" का वर्ष 18 अंक 28 आप सभी के समक्ष प्रस्तुत है।

भाषा संप्रेषण का माध्यम है। अतएव मानव जीवन में भाषा का महत्व सदैव बना रहेगा। मेरे विचार से भारतवर्ष जैसे बहुभाषी समुदाय के बीच परस्पर आपसी भावनाओं के संप्रेषण के लिए यदि कोई भाषा संपर्क का माध्यम बन सकती है, वह भाषा हिंदी ही है। किसी भी राष्ट्र की उन्नति में उसकी भाषा और संस्कृति का महत्वपूर्ण योगदान होता है। भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुसार हिंदी भाषा को सरकारी कामकाज में प्रयोग करने के लिए कई कदम उठाए गए हैं। इसी नीति के अंतर्गत सार्वजनिक क्षेत्र के प्रतिष्ठानों में भी हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार करते हुए कार्यालय के कामकाज में अधिक से अधिक प्रयोग सुनिश्चित करना है। हमारी कंपनी का पंजीकृत कार्यालय "ग" क्षेत्र में होने के बावजूद भी राजभाषा हिंदी के प्रति हमारे कार्मिकगण अत्यंत निष्ठापूर्वक हिंदी में कार्य करते हैं, जबकि यहां अधिकांश कार्मिकों की मातृभाषा असमिया है।

आप को ज्ञात ही होगा कि पिछले वर्ष की तरह इस वर्ष भी कोरोना महामारी और ज्यादा प्राणघातक बनकर पुनः हमारे सामने आया है। ऐसी प्रतिकूल परिस्थिति में भी "ऑयल किरण" का प्रकाशन करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। हमारे संपादक मंडल ने यह सराहनीय प्रयास कर दिखाया है। यह कार्य राजभाषा हिंदी के प्रति हमारी समर्पित भावना को उजागर करता है। इस पर हमें गर्व है। मैं उन सभी कार्मिकों को बधाई देता हूं जिन्होंने इस चुनौतीपूर्ण परिस्थिति में भी अपनी लेखन कला को जारी रखते हुए रचनाएं प्रस्तुत की हैं। आशा है कि हमारे संयुक्त व सतत प्रयासों के परिणामस्वरुप "ऑयल किरण" के इस नवीनतम अंक से आप सभी लाभांवित होंगे।

इस पत्रिका के प्रकाशन को यथार्थ रूप देने वाले सभी रचनाकारों का आभार व्यक्त करता हूं जिनके बिना यह कार्य संभव नहीं हो पाता। पत्रिका को अधिक उपयोगी बनाने के लिए आपके बहुमूल्य सुझावों की हमें सदैव प्रतीक्षा रहेगी।

शुभकामनाओं सहित,

प्रशांत बोरकाकोती

(प्रशांत बोरकाकोती)

राजीव बरुआ

ऑयल इंडिया लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम)
Oil India Limited
(A Government of India Enterprise)

मुख्य महाप्रबंधक (मानव संसाधन एवं प्रशासन) एवं
अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति,
क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान,
ऑयल इंडिया लिमिटेड

शुभकामना संदेश

यह गौरव की बात है कि हमारी छमाही गृह पत्रिका "ऑयल किरण" का वर्ष 18, अंक 28 प्रकाशित होने जा रहा है।

आदिकाल से ही मानव को अपनी भाषा के प्रति विशेष लगाव रहा है। भाषा हमेशा लोगों के मध्य भाई-चारे को बढ़ावा देता है। हिंदी भाषा सभी को एक सूत्र में बांधे रखती है। हिंदी वैज्ञानिक, सरल व सुबोध होने के परिणामतः लोगों के हृदय में विशेष स्थान बनाने में सक्षम हो पाया है। ऑयल अपने प्रचालनीय कार्य क्षेत्र में निरंतर व्यस्तता के बावजूद, राजभाषा हिन्दी के प्रयोग में निरंतर वृद्धि को सुनिश्चित करने का प्रयास करती आ रही है। ऑयल इंडिया लिमिटेड नराकास, दुलियाजान की अध्यक्षता का कार्यभार कई वर्षों से निरंतर संभालते आ रहे हैं। कोरोना महामारी के चलते उत्पन्न आज के प्रतिकूल परिस्थिति में भी ऑयल ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से नराकास, दुलियाजान की बैठकों का सफल आयोजन किया जो एक सराहनीय व प्रशंसनीय कदम है। यह हमारी कंपनी की राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के प्रति उनकी वचनबद्धता को दर्शाता है। हमारी कंपनी अपने कार्मिकों के साथ-साथ नराकास, दुलियाजान के सदस्य व कार्यालयों के कार्मिकगणों को भी प्रशिक्षण और हिंदी माह समारोह के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं में भाग लेने की सुविधा प्रदान करती हैं। हमारी कंपनी की एक मात्र हिन्दी पत्रिका"ऑयल किरण" में वे भी अपने विचार, लेख, कविता व रचनाएं प्रकाशित कर रहे हैं।

मैं उन सभी लोगों का अपना हार्दिक आभार प्रकट करना चाहूंगा जिन्होंने प्राण-घातक "कोरोना" वायरस से उत्पन्न महामारी के दौर में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रुप से कोरोना रोगियों को स्वस्थ करने में भरपूर सहयोग किया और उस महामारी से हमें जल्द से जल्द छुटकारा दिलाने हेतु प्रयासरत हैं। ऐसी प्रतिकूल परिस्थिति में भी हमारे संपादक मंडल हिंदी पत्रिका "ऑयल किरण" का नवीनतम अंक प्रकाशन करने हेतु दृढ़ संकल्पित हैं, जो एक सराहनीय कदम है।

मैं अपने रचनाकारों द्वारा भेजी गई रचनाओं के लिए अपना सादर अभिनंदन व्यक्त करता हूं जिनके बिना ऐसी प्रतिकूल परिस्थिति में यह कार्य संभव नहीं था। पत्रिका को उपयोगी बनाने के लिए आपका सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

शुभकामनाओं सहित,

राजीव बरुआ

(राजीव बरुआ)

अरुणज्योति बरूवा

ऑयल इंडिया लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम)
Oil India Limited
(A Government of India Enterprise)

मुख्य महाप्रबंधक (प्रशासन)
क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान,
ऑयल इंडिया लिमिटेड

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि हमारी गृह पत्रिका ''ऑयल किरण'' का नवीनतम अंक (वर्ष 18, अंक 28) प्रकाशित होने जा रहा है।

हमारी कंपनी का मुख्य कार्य कच्चे तेल एवं प्राकृतिक गैस का अन्वेषण, उत्पादन, परिवहन तथा वितरण करना है। अपने कार्य के अतिरिक्त, राजभाषा हिन्दी के विकास पर विशेष ध्यान देती आयी है और इसके साथ ही राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रदत्त निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए भी दृढ़ संकल्पित हैं। अतएव, अपना अधिक से अधिक कार्यालयीन कार्य राजभाषा हिंदी में करें और औरों को भी प्रेरित करें।

मैं उन सभी कार्मिकों का हार्दिक आभार प्रकट करना चहता हूं जिन्होंने जानलेवा "कोरोना" वायरस महामारी के दौर में भी पत्रिका हेतु अपनी रचनाएं भेजने की अनुकंपा की। इस अंक को उत्कृष्ट एवं पठन योग्य बनाने के लिए विशेष प्रयास किए गए हैं। आशा करता हूं कि यह अंक आपको पसंद आयेगा।

आपसे करबद्ध प्रार्थना है कि "कोरोना" वायरस से बचने के लिए भारत सरकार के दिशा-निर्देशों का सदैव अनुपालन करें। आप और आपका परिवार स्वस्थ रहे, सुरक्षित रहे- यही हमारी मनोकामना है।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

3/2021

(अरुणज्योति बरूवा)

त्रिदीब सैकिया

ऑयल इंडिया लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम)
Oil India Limited
(A Government of India Enterprise)

महाप्रबंधक (जन संपर्क) विभागाध्यक्ष
क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान
ऑयल इंडिया लिमिटेड

शुभकामना संदेश

हमारी कंपनी द्वारा प्रकाशित की जाने वाली एकमात्र हिंदी पत्रिका "ऑयल किरण" (वर्ष18, अंक-28)का नवीनतम अंक प्रकाशित होने जा रहा है। यह जानकर मुझे अपार हर्ष हो रहा है।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि हिंदी एक उन्नत, समृद्ध और वैज्ञानिक भाषा ही नहीं वरन यह सरल, सुबोध और आसानी से बोली और समझी जाने वाली भाषा भी है। अतएव हमारे देश में लोगों के बीच विचारों का आदान-प्रदान के लिए सबसे बेहतर और आसान साधन हिन्दी भाषा ही है। यह गर्व का विषय है कि हिन्दी भाषा ही देश की संपर्क भाषा होने के साथ-साथ राजभाषा भी है।

हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार को ध्यान में रखते हुए, कंपनी गैर हिंदी भाषा-भाषी के लिए हिन्दी शिक्षण प्रशिक्षण और हिंदी भाषा-भाषी के लिए असमिया शिक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रम कराती है। भाषा सीखने के बाद प्रशिक्षित कार्मिकगण एक दूसरों की बातों को आसानी से समझ लेते हैं। इससे कार्य निष्पादन में सुगमता आती है। कार्यालयों में हिंदी में अधिक से अधिक कार्य करने वाले कार्मिकों को ऑयल इंडिया लिमिटेड की समेकित प्रोत्साहन योजना के तहत प्रोत्साहित किया जाता है।

आज पूरे विश्व के साथ हमारा देश भी कोरोना महामारी से लड़ रहा है। ऐसी प्रतिकूल परिस्थिति में भी राजभाषा कार्यान्वयन को विशेष महत्व देते हुए संपादक मंडल ने ऑनलाइन माध्यम से "ऑयल किरण" प्रकाशित करने का निर्णय लिया है जो कि एक प्रशंसनीय कदम है। इस दौरान हमारे यहां सभी बैठकें, कार्यशालाएं वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से आयोजित की जा रही हैं। यह राजभाषा हिंदी के प्रति हमारी वचनवद्धता और सकारात्मक चिंतन को दर्शाता है। मैं उन सभी रचनाकारों का साधुवाद करना चाहता हूं जिन्होंने आज के चिंताजनक हालात में भी अपनी लेखन शैली को जीवित रखा।

आशा करता हूं कि "ऑयल किरण" का यह नवीनतम अंक अवश्य आप लोगों को पसंद आएगा। ऐसी प्रतिकूल परिस्थिति में "ऑयल किरण" के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मंडल को विशेष शुभकामनाएं।

शुभकामनाओं सहित,

त्रिदीब सैकिया

(त्रिदीब सैकिया)

मैं नारी हूँ

✍रीवा कुमार
आश्रित -राकेश कुमार
महाप्रबन्धक (इन्डेग), इन्डेग विभाग, दुलियाजान

मैं जन्म लेती हूँ------- देती हूँ,
नम आँखों में भी मुसकाती हूँ।
पीड़ा स्वयं की भूलकर,
हँसती और हँसाती हूँ।
कई हिस्से में बँटकर भी,
हर हिस्से से जुड़ जाती हूँ।
न कभी मैं हारी थी,
ना कभी मैं हारी हूँ।
मैं नारी हूँ॥
कभी फूलों-सी निखरी हूँ,
कभी खुशबू-सी बिखरी हूँ।
कई बार खिलने से पहले,
मैं नोंच डाली जाती हूँ।
सँवर जाए अपनी ही रौ में
मैं वही फुलवारी हूँ।
मैं नारी हूँ॥
कभी बूँदों-सी झरती हूँ,
कभी दीये-सी जलती हूँ।
कभी हवा के झोंकों से बच,
दीपशिखा-सी उभरी हूँ।
कई बार जबरन चिता में
जिन्दा झोंक दी जाती हूँ।
बुझती राख से जन्मी,
मैं वही चिंगारी हूँ॥
मैं नारी हूँ॥
कभी स्नेहलता-सी लिपटी हूँ,
कभी छुई-मुई-सी सिमटी हूँ।
कभी जन्म लेने से पूर्व ही
मैं मार डाली जाती हूँ।
कभी जन्म देने की खातिर
अपनी साँसें भी वारी हूँ।
न कभी मैं हारी थी
ना कभी मैं हारी हूँ।
मैं नारी हूँ॥ ❑

नैनो की बतिया

✍रीवा कुमार
आश्रित - राकेश कुमार
महाप्रबन्धक(इन्डेग), इन्डेग विभाग, दुलियाजान

नैना दूजी से कहे
तुझे कभी देखा नहीं।
देखती हूँ सारा भुवन
पर तुझे ही लखा नहीं।
सुना है तू है मुझ-सी
मुझ-सी ही भाव रखती
चोट लगती जब कहीं
तू भी है मेरे संग बहती।
देखती हूँ जब भी दर्पण में
उतर जाती तू ही मन में।
देख ना सकी कभी कोरो से
महसूस किया है बस
ऊँगलियों की पोरों से।
हथेलियों की तरह
कभी दूजे से मिली नहीं।
जोड़ी बनी रहे हमारी
जैसी होती है बहनों की।
मुसकाना तू संग मेरे
मैं चुरा लूँगी अश्रु बूँद तेरे
नैना...नैना से कहे
तुझे कभी देखा नहीं !
हँसती रोती संग तेरे,
पर तुझे कभी लखा नहीं। ❑

वो ट्रेन की यादें...

✍नवनीता राजपूत
आश्रित - कमलजीत राजपूत
वेधन सेवाएं विभाग, दुलियाजान

वो भी क्या दिन थे!
जब हम भी बाँधते थे,
अपना छोटा सा सूटकेस
उसमें होते थे दुनिया के खेल,
ताशपत्ती, लूडो और सांप- सीढ़ी,
चम्पक नंदन वाली 'magazine'|

नीली-नीली रेलगाड़ी आती है पटरी पर,
हम चढ़ते हैं उस पर।
सीट नंबर ढूंढने का काम होता था हमारा,
चेन बाँधते हुए पापा को 'suitcase' पर देखने में मज़ा आता था बड़ा।
वो भी क्या दिन थे!

जैसे ही रात होती,
लुका-छुपी का खेल होता था शुरू।
चप्पल ऐसी जगह छुपाते,
जो सुबह उठकर ख़ुद भी भूल जाते।
वो भी क्या दिन थे!!

सुबह एक मीठी आवाज़ सुनाई देती,
"चाय! चाय! चाय ले लो चाय!!"
फिर हम उस चाय में biscuit डुबा-डुबाकर खाते,
कितना मज़ा आता था....
वो भी क्या दिन थे!

चाय पर चर्चा तो शुरू हुआ है लेट,
साथ wali seat par बैठे दो dadaji की चर्चा ख़त्म होती थी लेट,
उनकी बातें सुनते-सुनते
मैं और दीदी chess में करते थे Checkmate
वो भी क्या दिन थे!!

दोपहर होते ही,
वो नन्ही सी table बन जाती dining table,
IRCTC का खाना आता,
गरम गरम रोटी-चावल,
साथ में होता था अचार और सब्जी।
वो भी क्या दिन थे!!

मन तो बहुत करता था,
लाल चेन खींचने का,
हाथ आगे बढ़ाया पर पीछे से मम्मी चिलायीं,
"उसे हाथ लगाया तो, मोमो ठगनी चुरैल उठाकर ले जाएगी।"
हे भगवान! इतना डर लगता था फिर,
कि आज तक उसे खींचा ही नहीं।
वो भी क्या दिन थे!!

जब भी हम सड़क पार करते,
हम बच्चों को VIP वाली फ़ीलिंग आती,
आख़िर आती भी क्यूँ ना??
जब तक हमारी गाड़ी आगे नहीं बढ़ जाती,
तब तक उस जगह की जनता उस सड़क को पार नहीं कर पाती।
वो भी क्या दिन थे!

शाम को पड़ोस वाले दीदी- भैया आते थे,
जान- ना - पहचान हमारे साथ खूब खेला करते थे।
ये उन दिनों की बात है,
जब रिश्ते FB पर नहीं,
ट्रेन में बनते थे
'दिरेक्ट मेसेज' नहीं उनके address पर चिट्ठी लिखकर भेजी जाती थी।
वो भी क्या दिन थे!

पापा ट्रेन घुमाने लेकर जाते,
हम नन्हें बच्चों को देखकर,
सब मुसकुराते...
आख़िर फोन जो नहीं थे!!
मुश्किल तो तब होती थी ट्रेन में जब,
उस हिलते हुए दो डब्बों के बीच वाले गलियारे से गुजरना होता था...
हमारे पैर लड़खड़ा जाते,
और हम बोलते, "पापा गोदी।"
वो भी क्या दिन थे!

वो भी क्या दिन थे!!
जब हिलती हुई गाड़ी में
ब्रश पर टूथपेस्ट लगाना भी एक कला थी।
उस नल को एक हाथ से ऊपर उठाकर,
दूसरे से ब्रश करना एक समस्या थी।
खिड़की से झांकते-झांकते,
कब समय गुज़र गया, पता na लगा,
Bye! Bye! ट्रेन और नए साथियों,
फिर मिलेंगे चलते-चलते। ❑

कर्म - धर्म - दंड - भेद

प्रतीक बरुआ
उप मुख्य अभियंता,कम्प्रेसर मेंटेनेंस अनुभाग,
गैस प्रबंधन सेवाएं विभाग, दुलियाजान

हस्तांतरित कार्य का अग्रगमन था मंद...
प्रतिवेशी समाज से भी था विभिन्न पाबन्द !

सहयोग के लिए नियुक्त लोग थे चंद...
क्षेत्र में विस्तृत था मानसिक दुर्गन्ध !

ग्रीष्म प्रवाह हो या कड़ाके की ठण्ड...
कार्य प्रतिबन्ध था चारों तरफ प्रचंड !

एकाकीत्व में हौसला था फिर भी बुलंद...
हर छोटी सफलता से भी मिलता था आनंद !

हर चुनौती को पार करने के लिए करते थे प्रबंध...
कर्म को धर्म मानने की हमने ली थी जो सौगंध !

स्वार्थरहित कर्म करने के लिए किया गया नापसंद...
निष्कपटता के फल के रूप में दिया गया कठोर दंड !

पर किसी व्यक्ति -विशेष से नहीं, अपने कर्त्तव्य से रखना है सम्बन्ध...
हर भेद - भाव और तिरष्कार को स्वीकारना है सानंद !

हर एक कार्य में हमारा समर्पण है अखंड...
जीविका के एकमात्र श्रोत को नहीं होने देना है द्विखंड !

सहृदयता से धनात्मक सोच का फैलाना है सुगंध...
त्याग की सीमा लांघ कर भी अपने उद्योग को रखना है स्वच्छन्द ! ❑

इश्क का परवाना

आयुष सोमानी
प्रबंधक (सामग्री)
सामग्री विभाग, दुलियाजान

तेरी राह देखता हूं मैं हर घड़ी हर पल,
तेरे इंतजार में मौसम जाते हैं बदल।
मेरी आंखें तेरे हुस्न का करना चाहती हैं दीदार,
तेरी दिलकश अदा पर होना चाहता हूं निसार।
तेरे बिन न मेरा दिन गुजरता है, न कटती है मेरी रात,
मेरी जिंदगी में जल्दी आ जा, दे दे मुझे तू अपना साथ।
यह तनहाई मुझसे सही न जाए अब
खुदा जाने तेरी मुझसे मुलाकात हो कब।
अब आ भी जा मेरे करीब ओ जानेमन,
मेरे सपनों की रानी, तुझ पर वार दूं अपना जीवन।
अब हकीकत भी बन जा, तेरा बनना चाहता हूं मैं दिवाना,
तू बन जा मेरी शमा, मैं बन जाऊंगा तेरे इश्क का परवाना। ❑

" मनुष्य का सबसे बड़ा यदि कोई शत्रु है तो वह है उसका अज्ञान|"
- चाणक्य

कम्प्रेसर मेंटेनेंस ! ऑयल के लिए, ऑयल के साथ !

✍ **प्रतीक बरुआ**
उप मुख्य अभियंता, कम्प्रेसर मेंटेनेंस अनुभाग,
गैस प्रबंधन सेवाएं विभाग, दुलियाजान

"कम्प्रेसर मेंटेनेंस"नाम है अनुभाग का
शान है गैस प्रबंधन सेवाएं विभाग का !

मूल काम हमारा गैस संपीडक चलन एवं अनुरक्षण का
जिम्मा हमारा वायु संपीडक को भी कार्यक्षम रखने का !

संपीडक प्रतिस्थापनों में चाप कायम रहे गैस का
हम तत्काल निष्पादन करते यन्त्र मरम्मत सन्देश का !

लक्ष्य "कम दबाव संपीडक" के चलन से अवांछित गैस ज्वाला बुझाने का
और "उत्तोलक संपीडक"के उच्च चाप गैस से कच्चे तेल का उत्पाद बढ़ाने का !

कर्तव्य हमारा करीब दो सौ संपीडक प्रतिपालन का
उपयोग करते हम पारम्परिक और आधुनिक पद्धतियों का !

यन्त्र भंग-मरम्मत कार्य अक्सर बाधा बनता उद्योग के उत्पादन का
संपीडक के चलन-विश्वसनीयता के लिए हम उपयोग कर रहे अनेक आधुनिक प्रौद्योगिकी का !

एक युग था सिर्फ वायवीय नियंत्रण प्रणाली से संपीडक संचालन का
"कम्प्रेसर मेंटेनेंस" अनुभाग अब उपयोग करता अंकीय विद्युदाणविक तकनीकी का !

कार्यान्वयन हो रहा "सी. पी. यू 95" , "अल्ट्रॉनिक एक्सेक्टा" और "स्नेप शॉट" जैसी "स्थिति आधारित निगरानियों" का
आशीर्वाद साबित होंगी ऐसी प्रयुक्तियाँ संपीडक के निरंतर परिचालन का !

संपीडक में तो सभी व्यवहार करते हैं परम्परागत "वाल्वस" का
भारत में अग्रदूत बनें हम "ज़हरूफ" सीधे प्रवाह वाले अत्याधुनिक "वाल्वस" का !

प्रयत्न करते हम हर क्षण शिला तैल उत्पादन बढ़ाने का
दिन या रात्रि के बंधन से मुक्त होकर ध्यान केंद्रित करते बेहतर कार्य सम्पादन का !

ये समय है निष्ठा से सदैव सेवा में नियोजित होने का
कम्प्रेसर मेंटेनेंस शपथ-बद्ध है ऑयल की हर सफलता में अधिकतम गुणकारक योगदान का !! ❑

" लोग चाहे मुट्ठी भर हों, लेकिन संकल्पवान हों,
अपने लक्ष्य में दृढ़ आस्था हो, वे इतिहास को भी बदल सकते हैं "

- महात्मा गाँधी

उपलब्धि

✍ **प्रतीक बरुआ**
उप मुख्य अभियंता
कम्प्रेसर मेंटेनेंस अनुभाग
गैस प्रबंधन सेवाएं विभाग, दुलियाजान

किसी से पक्षपात किया
तो सो न पाऊंगा
खुद से होगा दगा
और रो न पाऊंगा !

किसी की चापलूसी की
तो उठ न पाऊंगा
सच्ची दोस्ती से मू मोरा
तो रूठ न पाऊंगा !

कर्म का अनादर किया
तो उल्लेख न पाऊंगा
सर्वदा अपेक्षा की "कल" की
तो "आज" भी जी न पाऊंगा !

किसी से द्वेष किया
तो इंसान न रहूंगा
किसी ने अगर किया कलेश
तो मूक न रहूंगा !

किसी ने निस्वार्थ काम किया
तो टोक न पाऊंगा
अन्याय के खिलाफ उठानी हो आवाज़
तो खुदको रोक न पाऊंगा !

किसी ने षड्यंत्र किया
तो टूट न जाऊंगा
ईश्वर करेगा न्याय
और मैं बस चलता रहूंगा, बढ़ता रहूंगा , चलता रहूंगा... ❑

नारी

✍ **पिंकी कुमारी प्रसाद**
सहायक - 1
क्रय विभाग, कोलकाता शाखा

मैं आज की पहचान हूँ
मैं आधुनिकता की आवाज हूँ।
रहती थी जो कल तक।
सहमी-सी डरी-सी
आज बन गई हूँ, लहू की अंगार सी।
मैं हूँ कल्पित समाज की मिसाल,
कल तक जो सपनों में दिखा था
आज ढल गई है, वो सोने की तार सी।
कमजोर नहीं आत्मविश्वास से भरी
असहाय नहीं, सहारा हूँ सबकी।
नहीं रह गई, सीमित घर के द्वार तक
बन गई हूँ, समाज की वरदान सी।
समाज के हर तख्ते में मेरी ही छाप है
मैं किसी से कम नहीं, ये दुनिया को दिखाऊँगी
'बहुत बंध चुकी, रूढ़िवादी विचारों से।
तोड़ उसे उड़ जाऊँगी, अपनी उम्मीदों की उड़ानों सी।
नारी हूँ मैं, हाँ नारी हूँ मैं। ❑

"मनुष्य का पतन
कार्य की अधिकता से नहीं वरन कार्य
की अनियमतता से होता है।"
- अज्ञात

उम्मीद

✍ फ़रजान अहमद
वरिष्ठ अधिकारी,
राजस्थान क्षेत्र

इस भीड़ में अभी हमारी औकात सुनसान-सी है
यह कल्पना कोई महान नहीं इंसान-सी है
क्या सच में इतनी विकृति छा गयी है
के बर्ताव भेदभाव की वज़ह बस उनकी पहचान-सी है।

यह कैसा चश्मा ओढ़ लिया है सबने
सच्चाई को भी नज़रिये से देखने लगे हैं
अरे सच तो बखुद श्रेष्ठ नज़रिया है
सच पानी है, हर कण में बस्ता है, नहीं उसको मोहताज कोई दरिया है।

कहीं चुप्पी साध लिए हो कहीं ज़ोर से हमलावर हो
खुशी की कहीं लहर है, सहानुभूति नहीं रत्ती भर है
पीड़ित की पीड़ा का क्या कोई मोल नहीं है
उसकी गलती है के उसका तुमसे मेल जोल नहीं है।

जिस शान व गुमान का जाम पी रहे हो
ज़मीर सोया है इतना फिर कैसे जी रहे हो
जनता के वक्ता न बनके सत्ता-धारी के पक्षधर हो गए
छल है, सब जुम्ले हैं, इन उम्मीदों में तुम्हारे विवेक कैसे खो गए।

जिन्होंने प्रतिज्ञा ली वह हँस रहे हैं तुम्हारे इस यकीन पर
वह भी निश्चित है, तुम्हारे जो सपने हैं कभी पूरे नहीं होंगे
रावण का अंत तो अनिवार्य है राम के संकल्प कभी अधूरे नहीं होंगे।

अभी भी वक़्त है हाथ मिलाओ और साथ दो
जो बोल नहीं सकता उसको बता दो
न्याय के बिना शांति मुमकिन नहीं
समूह बनो समुदाय नहीं
वह जो एकता बनेगी हर अहंकारी सत्ताधारी ढेर होगा
भला फिर सबका होगा न्याय में न कोई देर होगा

एक दिन वह सबेरा आएगा
जिसकी आस है, प्रयास है
निराशा कोई विकल्प नहीं
उम्मीद है जब तक साँस है। ❑

बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ

✍ श्रीमती प्रणामी गोहांई
वरिष्ठ सहायक-I
आंतरिक लेखा परीक्षा विभाग, दुलियाजान

माँ की दुलारी, प्यारी बेटी
घर-ऑगन की शान है बेटी
परिवार की ध्वजा है बेटी
बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ।
समाज की नींव है बेटी
देश की समृद्धि है बेटी
ममता की मूरत है बेटी
बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ।
बेटियों की उपेक्षा मत करो
बेटियों को ज्ञान से उभरने दो
प्रगतिशील समाज का आगार बनाओ
बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ।
घर की शान,
समाज की शान,
देश की शान है बेटी
बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ।
बेटियों से मुँह ना मोड़ो
बेटियों से उम्मीद ना छोड़ो
उच्च विचारों की ओर कदम बढ़ाओ
बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ। ❑

"मेहनत करने से दरिद्रता नहीं रहती, धर्म करने से पाप नहीं रहता, मौन रहने से कलह नहीं होता।"

- चाणक्य

महामारी और गरीब

✍ **हिमांशु डांगी**
वरिष्ठ प्रबंधक (वित्त एवं लेखा)
लेखा विभाग, राजस्थान क्षेत्र

थका हूँ लेकिन, रूका नहीं हूँ,
लड़ा हूँ लेकिन, हारा नहीं हूँ,
जीवन जीता हूँ मैं लेकिन, मरा नहीं हूँ।

नाम नहीं होता मेरा इस देश में,
घर नहीं होता मेरा इस देश में।
बुला लेता है कोई किसी नाम से,
रख लेता है कोई, मुझे काम की आस से ॥
जीवन जीता हूँ मैं लेकिन, मरा नहीं हूँ।

जात नहीं है मेरी, ना कोई पात है,
आवाज नहीं है मेरी ना कोई साज है,
कहते हैं लोग मुझे 'गरीब'सभी यहाँ,
है कोई नाम मेरा भी, पर कोई ले-ले यहाँ,
जीवन जीता हूँ मैं लेकिन मरा नहीं हूँ।

है कष्ट का आगाज इस महामारी में,
लोग भगाते हैं मुझे आज, इस महामारी में,
किसे कहुं इस दर्द की आवाज, इस महामारी में,
जीवन जीता हूँ मैं आज, इस महामारी में।

क्या था जीवन में बस, दो वक्त के खाने के सिवा,
आज वो भी नसीब नहीं है, बस तानों के सिवा,
देखता हूँ जब भी आसमान की तरफ आस से,
गला भर आता है, सिसकियों की आवाज से,
जीवन जीता हूँ मैं लेकिन मरा नहीं हूँ।

है इस वक्त यह डगर कठिन,
सिर्फ रूका हूँ मैं, लेकिन थका नहीं हूँ,
जब घुमेगा फिर से इस जीवन का पहिया,
भागूंगा मैं फिर से, जोर से भईया,
जीवन जीता हूँ लेकिन, मरा नहीं हूँ।

है मेरा भी खून-पसीना, इस सृष्टि की रचना में,
मैं भी भागीदार देश की संरचना में,
लेके चलो मुझे भी अपने साथ ऐ दुनिया वालों,
केवल गरीब हूँ मैं, मरा नहीं हूँ।
जीवन जीता हूँ मैं लेकिन, मरा नहीं हूँ। ❑

कोरोना की मार

✍ **श्रीमती तनु गुप्ता**
आश्रित - सचिन गुप्ता
सी.ओ.ई.ई.एस., गुवाहाटी

लगा था जीवन पटरी पर आ गया !
लोगों की जीवन में आनंद छा गया !
पर पुन: वायरस ने हम सबको घेरा !
लगा था सवेरा, पर हो गया अंधेरा !

डर-डर कर जीवन, फिर जी रहे !
प्रकृति से छेड़छाड़ का परिणाम झेल रहे !
सादा जीवन जीने का बेहतर उपाय !
प्राचीन तौर-तरीकों को जीवन में अपनाएं !

जहरीले पदार्थों में कैसी है शान !
सेवन से इनके खतरे में है जान !
भावी पीढ़ी को मिलकर है बचाना !
गुड़, घी, दूध उनको है खिलाना !

चिप्स पिज़्ज़ा बर्गर करें, स्वास्थ्य का व्यापार !
योग संतुलित आहार ही, जीवन का आधार !
रखिए सोशल डिस्टेंसिंग, कीजिए नमस्कार !
मास्क से ही बचेगी, ये कोरोना की मार ! ❑

मेक इन इंडिया

✍डॉ. नवनीत स्वरगिरी
मुख्य चिकित्सा अधिकारी (दंत चिकित्सा)
चिकित्सा विभाग, दुलियाजान

उछल - उछल के मन मेरा बोला
आए दिन बहार के
फिर मैंने धीरे से किवाड़ खोला बाहर देखा
दिन तो था, पर उल्लू बैठा था
मैंने गुफ्तगू की, पूछा भाई मेरे
दिन में तेरा क्या काम ?
पर उत्तर मिला
अभी अच्छे दिन हैं जनाब
आजकल उल्लुओं का ही तो है काम !
शक्ल पर मेरी मत जाना
मैं हूं मेक इन इंडिया का परिणाम ! ❑

हमारे धैर्य की जीत होगी

✍कुमारी नीलम
वरिष्ठ प्रबंधक (कार्मिक)
डी.जी.एच (प्रतिनियुक्ति पर)

वक्त ऐसा कुछ बदला
दो गज़ में संसार सिमट गया।

रास्ते वीरान, गलियां खाली,
ना सुनाई देती कोई हँसी, ना बच्चों की किलकारी।

चेहरे छिपे मास्क के पीछे,
घरों के आगे लक्ष्मण रेखा खीचें।

जो जीवन के लिए थी जरूरी साँस,
वो रहे सुरक्षित, सबकी थी यही आस।

दूरियाँ बन गई सबकी मजबूरी,
मगर मानव की आशा कभी ना छूटी।

यकीन था यह समय भी बदल जायेगा
हर कोई अपने प्रियजनों से मिल पायेगा।

हँसी - ठहाकों की गूंज होगी,
कोरोना की नहीं, हमारे धैर्य की जीत होगी। ❑

हे धरती माँ मुझे माफ करना

✍ऋतुराज बोरा
वरिष्ठ सहायक
सामग्री विभाग, दुलियाजान

हे धरती माँ, मेरी गलती को करना स्वीकार,
दिनों- दिन बढ़ रही है तुम पर अत्याचार।
लालच में अंधे हैं हम, तुम्हारी रक्षा के लिए नहीं आता कोई विचार॥
तुमने दिया हमें हवा, जल, भोजन, बिज एवं फल,
उन्नति के नाम पर हो रही तुम पर वार, मचा रहे हलचल।
तुम्हारी रक्षा के बिना ना जाने कैसे गुजरेगा आने वाला कल॥
पेड़ो पर चलाई कुल्हाड़ी, जंगल काट कर इमारत बनाई,
रासायनिक खाद डालकर अत्याधिक फसल उगाई।
जमीन की उर्वरता बर्बाद करके खूब पैसा कमाई॥
विज्ञान के नए-नए आविष्कारों ने किया चमत्कार,
प्रदूषण के परिणाम पशु-पक्षी हुए बेघर, करना था जिनका हमें सत्कार।
औद्योगीकरण के नाम प्रकृति पर हो रहा निरंतर बलात्कार॥
विकास के नाम नित्य हो रही नई चीजों की खोज,
नदी-पहाड़ और वन सम्पदा को मिटा रहे हम हर रोज।
इसे देख काँपता तुम्हारी कोख, फिर भी सहन करते हो दुखों का बोझ॥
इतनी दुख और कष्ट देने के बावजूद भी हमारी गलती स्वीकार करना,
हे धरती माँ मुझे तुम माफ करना॥ ❑

"हज़ार योद्धाओं पर विजय पाना आसान है, लेकिन जो अपने ऊपर विजय पाता है वही सच्चा विजयी है।"

- गौतम बुद्ध

राजभाषा हिंदी के समुचित विकास में 12 प्र की प्रभावशाली भूमिका

✍ **डॉ. सुमीत जैरथ**
सचिव, राजभाषा विभाग,
गृह मंत्रालय, भारत सरकार

राजभाषा अर्थात राज-काज की भाषा, अर्थात सरकार द्वारा आम-जन के लिए किए जाने वाले कार्यों की भाषा। राजभाषा के प्रति लगाव और अनुराग राष्ट्र प्रेम का ही एक रूप है। संविधान सभा ने 14 सितंबर 1949 को हिंदी को राजभाषा का दर्जा प्रदान किया था। वर्ष 1975 में राजभाषा विभाग की स्थापना की गई और यह दायित्व सौंपा गया कि सभी केंद्र सरकार के कार्यालयों/मंत्रालयों/ उपक्रमों/बैंकों आदि में अधिक से अधिक कार्य हिंदी में किया जाना सुनिश्चित किया जाए। तब से लेकर आज तक देश भर में स्थित केंद्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों एवं विभागों आदि में सरकार की राजभाषा नीति का अनुपालन तथा सरकारी काम-काज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने में राजभाषा विभाग की अहम भूमिका रही है। राजभाषा विभाग अपने क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालयों और नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के माध्यम से सभी स्तरों पर राजभाषा का प्रभावी कार्यान्वयन सुनिश्चित करता है।

हम सभी जानते हैं कि जब हमारे संविधान निर्माता संविधान को अंतिम स्वरूप दे रहे थे, इसका आकार बना रहे थे, उस वक्त कई सारी ऐसी चीजें थी जिसमें मत-मतांतर थे। देश की राजभाषा क्या हो?, इसके विषय में इतिहास गवाह है कि तीन दिन तक इस संदर्भ में बहस चलती रही और देश के कोने-कोने का प्रतिनिधित्व करने वाली संविधान सभा में जब संविधान निर्माताओं ने समग्र स्थिति का आकलन किया, दूरदर्शिता के साथ अवलोकन, चिंतन कर एक निर्णय पर पहुंचे तो पूरी संविधान सभा ने सर्वानुमत से 14 सितंबर 1949 के दिन हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार करने का निर्णय लिया।

26 जनवरी 1950 को लागू भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 में यह प्रावधान रखा गया कि संघ की राजभाषा 'हिंदी' व लिपि 'देवनागरी' होगी।

अनुच्छेद 351 के अनुसार भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहां आवश्यक या वांछनीय हो वहां उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत से, और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए हिंदी की समृद्धि सुनिश्चित की जानी है।

महान लेखक महावीर प्रसाद द्विवेदी की पंक्तियां आप जिस प्रकार बोलते हैं, बातचीत करते हैं, उसी तरह लिखा भी कीजिए| भाषा बनावटी नहीं होनी चाहिए|' को ध्यान में रखते हुए राजभाषा - हिंदी को और सरल, सहज और स्वाभाविक बनाने के लिए राजभाषा विभाग दृढ़ संकल्प है। केंद्र सरकार के कार्यालयों/ मंत्रालयों/ उपक्रमों/बैंकों आदि में राजभाषा हिंदी में काम करने को दिन-प्रति-दिन सुगम और सुबोध बनाने का प्रयास किया जा रहा है। साथ ही साथ प्रधानमंत्री जी के "आत्मनिर्भर भारत" "स्थानीय के लिए मुखर हों (Self Reliant India- Be vocal for local) के अभियान को आगे बढ़ाते हुए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत में सी-डेक, पुणे के सौजन्य से निर्मित स्मृति आधारित अनुवाद टूल "कंठस्थ" का विस्तार कर रहा है जिससे अनुवाद के क्षेत्र में समय की बचत करने के साथ-साथ एकरूपता और उत्कृष्टता भी सुनिश्चित हो।

राजकीय प्रयोजनों में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार बढ़ाने तथा विकास की गति को तीव्र करने संबंधी संवैधानिक दायित्वों को पूर्ण करने के संबंध में हमारी प्रभावी रणनीति किस प्रकार की होनी चाहिए, इसका मूल सूत्र क्या होना चाहिए?, इस पर विचार करने के दौरान मुझे माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा दिए जाने वाले 'स्मृति-विज्ञान' (Mnemonics) की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण और उपयोगी नजर आती है। विदेश से भारत में निवेश बढ़ाने के लिए माननीय प्रधानमंत्री जी के छह डी

- Democracy (लोकतंत्र)
- Demand (मांग)
- Demographic Dividend (जनसांख्यिकीय विभाजन)
- Deregulation (अविनियमन)
- Descent (उत्पत्ति)
- Diversity (विविधता)

से प्रेरणा लेते हुए राजभाषा के सफल कार्यान्वयन के लिए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने "12 प्र की रणनीति-रूपरेखा (Frame work) की संरचना की है, जो निम्न प्रकार से है:

1. प्रेरणा (Inspiration and Motivation)

प्रेरणा (Inspiration) का सीधा तात्पर्य पेट की अग्नि (Fire in the belly) को प्रज्वलित करने जैसा होता है। हम सभी यह जानते हैं कि प्रेरणा में बड़ी शक्ति होती है और यह प्रेरणा सबसे पहले किसी भी चुनौती को खुद पर लागू कर दी जा सकती है। प्रेरणा कहीं से भी प्राप्त हो सकती है लेकिन यदि संस्थान का शीर्ष अधिकारी किसी कार्य को करता है तो निश्चित रूप से अधीनस्थ अधिकारी/कर्मचारी उससे प्रेरणा प्राप्त करते हैं।

2. प्रोत्साहन (Encouragement)

मानव स्वभाव की यह विशेषता है कि उसे समय-समय पर प्रोत्साहन की आवश्यकता पड़ती है। राजभाषा हिंदी के क्षेत्र में यह प्रोत्साहन अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अधीनस्थ अधिकारियों/कर्मचारियों को समय-समय पर प्रोत्साहित करते रहने से उनका मनोबल ऊंचा होता है और उनके काम करने की शक्ति में बढ़ोतरी होती है।

3. प्रेम (Love and Affection)

वैसे तो प्रेम जीवन का मूल आधार है किंतु कार्य क्षेत्र में अपने शीर्ष अधिकारियों द्वारा प्रेम प्राप्त करना कार्य क्षेत्र में नई ऊर्जा का संचार करता है। राजभाषा नीति सदा से ही प्रेम की रही है यही कारण है कि आज पूरा विश्व हिंदी के प्रति प्रेम की भावना रखते हुए आगे बढ़ रहा है।

4. प्राइज अर्थात पुरस्कार (Rewards)

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा प्रत्येक वर्ष राजभाषा कीर्ति पुरस्कार और राजभाषा गौरव पुरस्कार दिए जाते हैं। राजभाषा कीर्ति पुरस्कार केंद्र सरकार के मंत्रालयों/विभागों/बैंकों उपक्रमों आदि को राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए दिए जाते हैं और राजभाषा गौरव पुरस्कार विभिन्न मंत्रालयों/विभागों/उपक्रमों बैंकों आदि के सेवारत तथा सेवानिवृत अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा हिंदी में लेखन कार्य को प्रोत्साहित करने के लिए प्रदान किए जाते हैं। यह पुरस्कार 14 सितंबर, हिंदी दिवस के दिन माननीय राष्ट्रपति महोदय द्वारा प्रदान किए जाते हैं। पुरस्कारों का महत्व इस बात से समझा जा सकता है कि देश के कोने-कोने से इन पुरस्कारों के लिए प्रविष्टि आती है। जब मैंने राजभाषा विभाग का कार्यभार संभाला उस समय स्मृति आधारित अनुवाद टूल 'कंठस्थ के अंदर डेटाबेस को मजबूत करने के लिए स्वस्थ प्रतियोगिता एवं सचिव (रा.भा.) की ओर से प्रशस्ति पत्र देने का निर्णय किया। इस कदम का यह परिणाम हुआ कि लगभग छह महीने के अंदर ही कंठस्थ का डाटा 20 गुना से ज्यादा बढ़ गया। इसलिए हम यह कह सकते हैं कि प्रतिस्पर्धा एवं प्राइज यानि पुरस्कार का महती योगदान होता है।

5. प्रशिक्षण (Training)

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान तथा केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो के माध्यम से प्रशिक्षण का कार्य करता है। पूरे वर्ष अलग-अलग आयोजनों में सैकड़ों की संख्या में प्रशिक्षणार्थी इन संस्थानों के माध्यम से प्रशिक्षण पाते हैं। कहते हैं - "आवश्यकता, आविष्कार और नवीकरण की जननी है।" कोरोना महामारी ने हम सभी के सामने अप्रत्याशित संकट और चुनौती खड़ी कर दी। समय-समय पर प्रधानमंत्री जी ने राष्ट्र को संबोधित कर हम सभी को इस महामारी से लड़ने के लिए संबल प्रदान किया। इससे प्रेरित होकर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने आपदा को अवसर में परिवर्तित कर दिया। सूचना और संचार प्रौद्योगिकी का आश्रय लेते हुए – ई-प्रशिक्षण और माइक्रोसॉफ्ट टीम्स के माध्यम से हमारे दो प्रशिक्षण संस्थान - केन्द्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान तथा केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो ने पहली बार ऑनलाइन माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया। माननीय प्रधानमंत्री जी के आत्मनिर्भर भारत-स्थानीय के लिए मुखर हों (Be Local for Vocal) अभियान के अंतर्गत राजभाषा विभाग द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रम को स्वदेशी NIC-Video Desk Top पर माइग्रेट किया जा रहा है।

6. प्रयोग (Usage)

'यदि आप प्रयोग नहीं करते हैं तो आप उसे भूल जाते हैं (If you do not use it, you lose it) हम जानते हैं कि यदि किसी भाषा का प्रयोग कम किया जाए या न के बराबर किया जाए तो वह धीरे-धीरे मन मस्तिष्क के पटल से लुप्त होने लगती है इसलिए यह आवश्यक होता है की भाषा के शब्दों का व्यापक प्रयोग समय-समय पर करते रहना चाहिए। हिंदी का प्रयोग अपने अधिक से अधिक काम में मूल रूप से करें ताकि अनुवाद की बैसाखी से बचा जा सके और हिंदी के शब्द भी प्रचलन में रहें।

7. प्रचार (Advocacy)

संविधान ने हमें राजभाषा के प्रचार का एक महत्वपूर्ण दायित्व सौंपा है जिसके अंतर्गत हमें हिंदी में कार्य करके उसका अधिक से अधिक प्रचार सुनिश्चित करना है। हिंदी के प्रचार में हमारे शीर्ष नेतृत्व – माननीय प्रधानमंत्री जी तथा माननीय गृह मंत्री जी राजभाषा हिंदी के मेसकोट- ब्रैंड राजदूत (Brand Ambassadors) के रूप में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। देश-विदेश के मंचों पर हिंदी के प्रयोग से राजभाषा हिंदी के प्रति लोगों का उत्साह बढ़ा है। हम जानते हैं कि स्वतंत्रता के संघर्ष के दौरान राजनीतिक, सामाजिक

आदि क्षेत्रों में एक संपर्क भाषा की आवश्यकता महसूस की गई। संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का पक्ष इसलिए प्रबल था क्योंकि इसका अंतरप्रांतीय प्रचार शताब्दियों पहले ही हो गया था। उसके इस प्रचार में किसी राजनीतिक आंदोलन से ज्यादा भारत के विभिन्न क्षेत्रों में स्थापित तीर्थ स्थानों में पहुंचने वाले श्रद्धालुओं का योगदान था। उनके द्वारा भिन्न-भिन्न भाषा-भाषियों के साथ संपर्क करने का एक प्रमुख माध्यम भाषा हिंदी थी जिससे स्वत: ही हिंदी का प्रचार होता था। आधुनिक युग में प्रचार का तरीका भी बदला है। तकनीक के इस युग में संचार माध्यमों का बड़ा योगदान है इसलिए राजभाषा हिंदी के प्रचार में भी इन माध्यमों का अधिकतम उपयोग समय की मांग है।

8. प्रसार (Transmission)

राजभाषा हिंदी के काम का प्रसार करना सभी केंद्र सरकार के कार्यालयों/बैंकों/उपक्रमों आदि की प्राथमिक जिम्मेदारी में है और यह संस्था प्रमुख का दायित्व है कि वह संविधान के द्वारा दिए गए दायित्वों जिसमें कि प्रचार-प्रसार भी शामिल है, का अधिक से अधिक निर्वहन करे। राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाने और कार्यालय स्तर पर हिंदी में लेखन को प्रोत्साहित एवं प्रेरित करने में हिंदी गृह-पत्रिकाओं का विशेष महत्व है, इसलिए राजभाषा विभाग द्वारा विभिन्न केंद्रीय संस्थानों द्वारा प्रकाशित सर्वश्रेष्ठ पत्रिकाओं को राजभाषा कीर्ति पुरस्कार दिया जाता है। राजभाषा विभाग द्वारा अपनी वेबसाइट rajbhasha.gov.in पर बनाए गए ई -पत्रिका पुस्तकालय के माध्यम से हिंदी के पाठक विभिन्न सरकारी संस्थानों द्वारा प्रकाशित होने वाली ई-पत्रिकाओं से लाभान्वित हो सकेंगे| राजभाषा हिंदी के प्रसार में दूरदर्शन, आकाशवाणी की महत्वपूर्ण भूमिका है। इसके साथ-साथ बालीवुड ने हिंदी के प्रसार में अद्वितीय योगदान दिया है।

9. प्रबंधन (Administration and Management)

यह सर्वविदित है कि किसी भी संस्थान को उसका कुशल प्रबंधन नई ऊचाइयों तक ले जा सकता है इसे ध्यान में रखते हुए संस्था प्रमुखों को राजभाषा के क्रियान्वयन संबंधी प्रबंधन की जिम्मेदारी सौंपी गई है। राजभाषा नियम, 1976 के नियम 12 के अनुसार केन्द्रीय सरकार के प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का यह उत्तरदायित्व है कि वह राजभाषा अधिनियम 1963, नियमों तथा समय-समय पर राजभाषा विभाग द्वारा जारी दिशा-निर्देशों का समुचित रूप से अनुपालन सुनिश्चित कराएं, इन प्रयोजनों के लिए उपयुक्त और प्रभावकारी जांच-बिंदु बनवाएं और उपाय करें।

10. प्रमोशन (पदोन्नति) (Promotion)

राजभाषा हिंदी में तभी अधिक ऊर्जा का संचार होगा, जब राजभाषा कार्यान्वयन के लिए नियुक्त अधिकारी एवं कर्मचारी; केंद्रीय सचिवालय राजभाषा सेवा संवर्ग के सदस्यगण, सभी उत्साहवर्धक और ऊर्जावान हों और अपना कर्तव्य पूरी निष्ठा और समर्पण से निभाएं| समय-समय पर प्रमोशन (पदोन्नति) मिलने पर निश्चित रूप से उनका मनोबल बढ़ेगा और इच्छाशक्ति सुदृढ़ होगी|

11. प्रतिबद्धता (Commitment)

राजभाषा हिंदी को और बल देने के लिए मंत्रालय/विभाग/सरकारी उपक्रम/राष्ट्रीयकृत बैंक के शीर्ष नेतृत्व (माननीय मंत्री महोदय, सचिव, संयुक्त सचिव (राजभाषा), अध्यक्ष और महाप्रबंधक) की प्रतिबद्धता परम आवश्यक है। माननीय संसदीय राजभाषा समिति के सुझाव अनुसार और राजभाषा विभाग के अनुभव से यह पाया गया है कि जब शीर्ष नेतृत्व हिंदी के प्रगामी/उत्तरोत्तर ही नहीं, अपितु अधिकतम प्रयोग के लिए स्वयं मूल कार्य हिंदी में करते हैं तब उनके उदाहरणमय नेतृत्व (Exemplery Leadership) से पूरे मंत्रालय/विभाग/ उपक्रम/बैंक को प्रेरणा और प्रोत्साहन मिलता है| जब वे हिंदी के लिए एक अनुकूल और उत्साहवर्धक वातावरण बनाते हैं और बीच-बीच में हिंदी के कार्यान्वयन की निगरानी (Monitoring) करते हैं तब हिंदी की विकास यात्रा और तीव्र होती है जैसे कि गृह मंत्रालय और शिक्षा मंत्रालय में देखा गया है। अभी हाल में ही राजभाषा विभाग ने सबको पत्र लिखकर आग्रह किया है:

हर माह में एक बार सचिव/अध्यक्ष अपनी अध्यक्षता में जब वरिष्ठ अधिकारियों की बैठक करते हैं तब इसमें हिंदी में काम-काज की प्रगति और राजभाषा नियमों के कार्यान्वयन का मद भी अवश्य रखें और चर्चा करें।

अपने मंत्रालय/विभाग/संस्थान में अपने संयुक्त सचिव (प्रशासन)/प्रशासनिक प्रमुख को ही हिंदी कार्यान्वयन का उत्तरदायित्व दें और हर तिमाही में उनकी अध्यक्षता में विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति (OLIC) की बैठक करें।

12. प्रयास (Efforts)

राजभाषा कार्यान्वयन को प्रभावी रूप से सुनिश्चित करने की दिशा में यह अंतिम 'प्र' सबसे महत्वपूर्ण है। इसके अनुसार हमें लगातार यह प्रयास करते रहना है कि राजभाषा हिंदी का संवर्धन कैसे किया जाए। यहां कवि सोहन लाल द्विवेदी जी की पंक्तियां एकदम सटीक

बैठती हैं कि

लहरों से डर कर नौका पार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती

नन्हीं चींटी जब दाना लेकर चलती है
चढ़ती दीवारों पर, सौ बार फिसलती है
मन का विश्वास रगों में साहस भरता है
चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना न अखरता है
आख़िर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती

डुबकियां सिंधु में गोताखोर लगाता है
जा जाकर खाली हाथ लौटकर आता है
मिलते नहीं सहज ही मोती गहरे पानी में
बढ़ता दुगना उत्साह इसी हैरानी में
मुट्ठी उसकी खाली हर बार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती

असफलता एक चुनौती है, स्वीकार करो
क्या कमी रह गई, देखो और सुधार करो
जब तक न सफल हो, नींद चैन को त्यागो तुम
संघर्ष का मैदान छोड़ मत भागो तुम
कुछ किये बिना ही जय जयकार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती

संवैधानिक दायित्वों को पूर्ण करते हुए राजभाषा हिंदी को और अधिक सरल बनाने के लिए राजभाषा विभाग दृढ़ संकल्प और निरंतर प्रयासरत है| विभाग सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (Information and Communication Technology) का भी आश्रय ले रहा है। विभाग का मानना है कि राजकीय प्रयोजनों में हिंदी की गति को तीव्र करने के लिए ये दोनों आवश्यक परिस्थितियां (Necessary Conditions) हैं। इस दिशा में और गति देने के लिए शीर्ष नेतृत्व की प्रतिबद्धता और प्रयास पर्याप्त परिस्थितियां (Sufficient conditions) हैं।

संघ की राजभाषा नीति के अनुसार हमारा संवैधानिक दायित्व है कि हम राजभाषा संबंधित अनुदेशों का अनुपालन तत्परता और पूरी निष्ठा के साथ करें। हम स्वयं मूल कार्य हिंदी में करते हुए अन्य अधिकारियों / कर्मचारियों से भी राजभाषा अधिनियमों का अनुपालन सुनिश्चित कराएं ताकि प्रशासन में पारदर्शिता आए और आमजन सभी सरकारी योजनाओं व कार्यक्रमों का लाभ निर्बाध रूप से उठा सके। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इन **बारह 'प्र'** को ध्यान में रखकर राजभाषा हिंदी का प्रभावी कार्यान्वयन करने की दिशा में सफलता प्राप्त होगी और हम सब मिलकर माननीय प्रधानमंत्री जी के **'एक भारत, श्रेष्ठ भारत; 'सुदृढ़ आत्मनिर्भर भारत'** के सपने को साकार करने में सफल होंगे। ❑

क्या आप जानते है....

अभी विश्व के करीब 130 विश्वविद्यालयों में हिन्दी पढ़ाई जाती है और पूरी दुनिया में करोड़ों लोग हिन्दी बोलते हैं। चीनी भाषा के बाद यह दूसरी भाषा है जो इतनी बड़ी संख्या में बोली जाती है।

आज के युग में परिवार की अहमियत

✍ **आयुष सोमानी**
प्रबंधक - सामग्री
क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान

इस संसार में फैली हुई मानव सभ्यता के मूल विकास और विस्तार के लिए परिवार का होना अत्यंत आवश्यक है। परिवार का अर्थ है वह सामाजिक संस्था जो आपसी सहयोग और समन्वय से संचालित होती है और जिसमें समस्त सदस्य अपना जीवन प्रेम, स्नेह और भाईचारा पूर्वक निर्वाह करते हैं। एक सुखी-संपन्न और खुशहाल परिवार के लिए कई गुणा आवश्यक है जैसे संस्कार, मर्यादा, सम्मान, समर्पण, आदर, अनुशासन इत्यादि।

एक परिवार किसी भी इंसान के जन्म का कारण होता है और उसे उस परिवार से ही अच्छे या बुरे गुणों की प्राप्ति होती है। कहते हैं कि एक इंसान का सबसे बड़ा धन उसका परिवार होता है। यदि परिवार न हो, तो इंसान चाहे कितनी ही शोहरत, दौलत और कामयाबी हासिल कर ले, फिर भी सब बेकार ही होता है। परिवार वह शक्ति है जो किसी भी इंसान को हर सुख दुःख में संभाल कर रखता है। एक अच्छा परिवार मानव के चरित्र निर्माण से लेकर उसकी सफलता तक बहुत अहम भूमिका निभाता है।

भले ही इस दुनिया में परिवार एक छोटी सी इकाई है पर यह ही वह ईंट है जो एक स्वस्थ समाज का कारण बनता है। इसी समाज से देश बनता है और देशों से पूरे विश्व सभ्यता का निर्माण होता है। इसलिए कहा भी जाता है 'वसुधैव कुटुंबकम्' अर्थात पूरी पृथ्वी हमारा परिवार है। ऐसी भावना के पीछे परस्पर वैमनस्य, कटुता, शत्रुता व घृणा को कम करना है। परिवार के महत्व और उसकी उपयोगिता को प्रकट करने के उद्देश्य से प्रतिवर्ष 15 मई को संपूर्ण विश्व में 'अंतर्राष्ट्रीय परिवार दिवस' मनाया जाता है।

परिवार दो प्रकार होते हैं - एक होता है एकाकी परिवार यानी न्यूक्लियर फैमिली और दूसरा होता है संयुक्त परिवार यानी जॉइंट फैमिली। हमारे भारत देश में पुराने ज़माने से संयुक्त परिवार यानी जॉइंट फैमिली की परंपरा चली आ रही है हालांकि आजकल के समय में पश्चिमी देशों से आये एकाकी परिवार यानी न्यूक्लियर फैमिली की परिकल्पना ने अपना दबदबा कायम करना शुरू कर दिया है, जिसके प्रमुख कारण हैं - तीव्र औद्योगीकरण, शहरीकरण, आधुनिकीकरण व उदारीकरण।

एक ओर जहाँ संयुक्त परिवार में वृद्धों को संबल प्रदान होता है और उनके अनुभव व ज्ञान से युवा व बाल पीढ़ी लाभान्वित होती है जिसके फलस्वरुप घर में सामूहिक ज़िम्मेदारी के साथ-साथ परस्पर आदर प्रेम और अनुशासन का माहौल बना रहता है वहीँ एकाकी परिवारों की जीवन शैली ने दादा-दादी और नाना-नानी की गोद में खेलने व लोरी सुनने वाले बच्चों का बचपन छीन कर उन्हें मोबाइल का आदी बना दिया है।

आज के समय में संयुक्त परिवार की संस्कृति जो होने लगी है उसके पीछे मुख्य वजह हैं उपभोक्ता वादी संस्कृति, अपरिपक्वता, व्यक्तिगत आकांक्षा, स्वकेंद्रित विचार, व्यक्तिगत स्वार्थ सिद्धि, लोभी मानसिकता, आपसी मनमुटाव और सामंजस्य की कमी इत्यादि। एक और प्रमुख कारण है गाँवों और कस्बों में रोजगार के अपर्याप्त अवसर का होना जिसके कारण लोगों को शहरों का रूख करना पड़ता है। शहरों में भीड़ भाड़ रहने के कारण बच्चे अपने माता-पिता को चाहकर भी पास नहीं रख पाते हैं। यदि रख भी ले तो वे शहरी जीवन के अनुसार खुद को ढाल नहीं पाते हैं। गांवों की खुली हवा में सांस लेने वाले लोगों का शहरी की संकरी गलियों में दम घुटने लगता है।

बदलते वक़्त के दौरान पाश्चात्य संस्कृति (जो भौतिकतावादी आत्मकेंद्रित और स्वार्थपूर्ण है) के बढ़ते असर के कारण नयी पीढ़ी अपने अभिभावकों और बुज़ुर्गों का सम्मान कम करने लगी है। वृद्धावस्था में अधिकतर बीमार रहनेवाले माता-पिता अब उन्हें बोझ लगने लगे हैं। वे अपने संस्कारों और मूल्यों से कटकर एकाकी जीवन को ही अपनी असली खुशी व आदर्श मान बैठे हैं। देश में 'ओल्ड एज होम' की बढ़ती संख्या इशारा कर रही है कि भारत में संयुक्त परिवारों को बचाने के लिए एक स्वस्थ सामाजिक परिप्रेक्ष्य की नितांत आवश्यकता है। वहीं महंगाई बढ़ने के कारण परिवार के

एक-दो सदस्यों पर पूरे घर को चलाने की जिम्मेदारी आने के कारण आपस में हीन भावना पनपने लगी है। कमाने वाले सदस्य की पत्नी की व्यक्तिगत इच्छा एवं सपने पूरे नहीं होने के कारण वह अलग होना ही हितकर समझ बैठी है। इसके अलावा बुजुर्ग वर्ग और आधुनिक पीढ़ी के विचार मेल नहीं खा पाते हैं। बुजुर्ग पुराने जमाने के अनुसार जीना पसंद करते हैं तो युवा वर्ग आज की स्टाइलिश लाइफ जीना चाहते हैं। इसी वजह से दोनों के बीच संतुलन की कमी दिखती है, जो परिवार के टूटने का कारण बनती है।

यदि संयुक्त परिवारों को समय रहते नहीं बचाया गया तो हमारी आनेवाली पीढ़ी ज्ञान संपन्न होने के बाद भी दिशा हीन होकर विकृतियों में फंसकर अपना जीवन बर्बाद कर देगी। ऐसे में दोनों वर्गों के लोगों (यानी युवा पीढ़ी और वृद्ध पीढ़ी) के लिए यह ज़रूरी है कि वे एक दूसरे के दृष्टिकोण को समझने का प्रयास करें और मिलकर बीच का रास्ता निकालें; अर्थात युवा पीढ़ी भी जरूरत से ज़्यादा आधुनिकता का आलिंगन ना करे और बुज़ुर्ग पीढ़ी भी ज़रूरत से ज़्यादा पुरानी धारणाओं को पकड़ के ना रखे। याद रखें कि इस दुनिया में ऐसा कोई घर नहीं है जिसमें झगड़े नहीं होते, लेकिन यह मन मुटाव तक सीमित रहे तो बेहतर है। इसलिए यदि कभी विचारों का टकराव होने लगे तो दोनों पक्षों के लिए यह ज़रूरी है कि आपसी समझ और सहयोग से मामलों को सुलझाएं और मतभेद कभी नहीं होने दें। तभी जाकर कोई भी परिवार एक जुट रह पायेगा अन्यथा उसे बिखरते देर नहीं लगेगी। ❑

मन की बात

✍ **प्रतीक बरुआ**
उप मुख्य अभियंता
कम्प्रेसर मेंटेनेंस अनुभाग
गैस प्रबंधन सेवाएं विभाग, दुलियाजान

पहले मैं ऐसा नहीं था क्यूंकि तब जीवन-पथ पर बिछी हुई कांटों की चुभन से मेरा मन रक्तरंजित नहीं हुआ करता था। परिवार के बंधन के बीच खुद को सुरक्षित महसूस करता था। नहीं पता था कि बाहर एक चक्रव्यूह है जिसको हर किसी में एक अभिमन्यु की तलाश है ! पहले मैं लड़ने वालों में से नहीं था, पर अब लड़ना सीख रहा हूँ। पक्षपात कहें या पूर्व धारणा, इन दोनों से लड़ रहा हूँ। अपनी स्थितावस्था को कायम रखना सीख रहा हूँ। ज्यादातर हार रहा हूँ, कभी टुकड़ों में बिखर रहा हूँ क्योंकि शायद जीवन युद्ध में मैं अभी भी नवीन हूँ, पर लड़ रहा हूँ। विश्रृंखलता की हर अँधेरी रात को हरा कर एक आदर्श सुबह के लिए लड़ रहा हूँ !

सामने से कोई भी प्रशंसा के पूल बांधे फिर भी उसके अंदर ज्यादा बेहतर झांक पा रहा हूँ। जो दूसरों के बारे में मेरे सामने भला-बुरा कहे, वह मेरे पीठ के पीछे क्या गुल खिलायेगा, उसे समझने की कोशिश कर रहा हूँ। मेरी अनुपस्थिति में कोई दूसरा मेरे बारे में क्या कह रहा होगा, बेहतर अनुमान कर पा रहा हूँ। लड़ रहा हूँ ! जिसको अपने दुःख के बारे में बता रहा हूँ, कहीं वही मेरे दुःख का रचयिता तो नहीं ?? जानने की कोशिश कर रहा हूँ। आंसुओं को संभाल रहा हूँ। मेरे आंसू किसी के सुख का कारण तो नहीं ? उपलब्धि की सीढ़ियों में चढ़ रहा हूँ। लड़ रहा हूँ।

चार लोगों के साथ बैठ कर किसी पांचवे के खिलाफ नहीं बोल पाता हूँ। किसी की प्रवृत्ति को लेकर आलोचना करने के लिए खुद को उपयुक्त नहीं मानता हूँ। खुद की आलोचना करना सबसे कठिन कार्य है। हंसी आती है देख कर जब दो लोग तीसरे के बारे में भला-बुरा बोलते हैं। यह मुझसे शायद कभी नहीं हो पायेगा। लेकिन हाँ, खुद के खिलाफ हो रहे पक्षपात का डट कर मुकाबला करूँगा और कर रहा हूँ। दूसरों की आलोचना में समय अपव्यय न करके कुछ रचनात्मक करने की कोशिश कर रहा हूँ। लड़ रहा हूँ।

बार-बार उपेक्षित होने के दर्द को शायद आज कल कभी-कभी ज्यादा महसूस करता हूँ। लेकिन इस दर्द से कुछ नए पैमानों से भी रूबरू हो रहा हूँ। इंसान की फ़ितरत कितनी पेचिदा होती है, वह समझ पा रहा हूँ। गले लगा कर शाबाशी देने वाला सच्चा प्रशंसक भी हो सकता है या सबसे बड़ा षड्यंत्रकारी भी। जिसको सभी

दुत्कारते हैं, वही समय पर साथ दे सकता है, ऐसी अपेक्षा भी रखता हूँ। पारम्परिक मगर गलत धारणाओं से लड़ रहा हूँ। कोई अगर अकेला एक तरफ खड़ा है और बाकी सब दूसरी तरफ तो इसका मतलब यह नहीं कि वह गलत है और बाकी सब सही। मैं सही और गलत का फैसला होने तक अकेले खड़े उस इंसान के साथ खड़ा होना पसंद करता हूँ। गलती से गलत ठहराए जाने वाले इंसान को अकेलापन तोड़ सकता है, सचमुच में गलत बना सकता है। प्रयत्न करता हूँ कि अपने इर्द गिर्द ऐसा न हो। इसलिए लड़ रहा हूँ।

हर पल हर किसी का मूल्यांकन हो रहा है और कोई न कोई मूल्यांकन कर रहा है । दया आती है यह सोच कर कि मूल्यांकन करनेवाले ने कभी यह नहीं सोचा कि दूसरों का मूल्यांकन करते-करते वह सहृदयता के हर पैमाने में खुद अनुतीर्ण होता जा रहा है। लोगों का बेवजह मूल्यांकन बंद होना चाहिए। किसी को हक़ नहीं बनता कि वह दूसरे का निरंतर आकलन करे। मेरा भी आकलन हो रहा है। मेरे जीवन में चल रहे युद्ध का किसी को कुछ नहीं पता । दरअसल किसी के युद्ध के बारे में किसी को नहीं पता। ऐसे मूल्यांकन और आकलन को बंद करने के लिए लड़ रहा हूँ। वास्तव में मूल्यांकन किसी और का होना चाहिए जिसके बारे में इस लेख के अंत में संक्षिप्त रूप में व्यक्त किया गया है। गलत और अवांछित मूल्यांकन की वजह से मेरे खिलाफ किसी के मन में पनप रहे भ्रांत धारणाओं को अपने ऊपर हावी होने नहीं दे रहा हूँ। ऐसी अनुचित धारणाओं को परास्त करने की कोशिश कर रहा हूँ। अभिमन्यु बनने से बच रहा हूँ ! लड़ रहा हूँ।

पक्ष जुटाव , जिसे अंग्रेजी में लॉबीयिंग कहा जाता है, एक निष्पक्ष समाज के स्थायित्व का सबसे बड़ा अड़चन है। पक्ष जुटाव, अनुपयुक्त लोगों को किसी भी परिस्थिति में अत्याधिक और अवांछित लाभ उठाने का मौका देती है। उपयुक्त लोग अक्सर अपनी काबिलियत की वजह से ऐसे पक्ष जुटाव से दूर रहते हैं। उन्हें विश्वास रहता है कि उनकी कर्म क्षमता उनको किसी भी अवरोध को पार कर ले जाएगी। लेकिन प्रायः यह देखा जाता है कि पक्ष जुटाव की वजह से उपयुक्त लोग अपने सही मुकाम तक नहीं पहुँच पाते और इससे समाज की ही क्षति होती है। इसलिए पक्ष जुटाव के खिलाफ लड़ रहा हूँ। यकीन मानिये, खुद को उपयुक्त कहना बिल्कुल नहीं चाह रहा, लेकिन हर पक्ष जुटाव को पहचानने की कोशिश कर रहा हूँ ताकि अपने प्रतिवेश के हर उपयुक्त को आगाह कर सकूँ। हर उपयुक्त के साथ उसके समर्थन में खड़ा हो सकूँ। खुद के और निष्पक्ष समाज के लिए लड़ना चाहता हूँ और लड़ रहा हूँ !

महसूस कर रहा हूँ कि असामाजिकता और वासना छुपाने से ज्यादा दिखावे की चीज़ बनती जा रहीं हैं। ऐसे असामाजिक एवं निकृष्ट लोग समाज में सामान्य रूप से स्वीकार्य होते दिख रहे हैं। कोई कितना भी समृद्धिशाली और प्रसिद्ध क्यों न हो, असामाजिक कार्य में अगर लिप्त होता दिख रहा है तो उसे उसका दंड मिलना चाहिए। वो दंड कानूनी या फिर सभ्य समाज से स्थायी दूरी भी हो सकती है। लेकिन क्या ऐसे लोगों को दंड मिल रहा है या फिर गलती से ऐसे लोगों को सर पे चढ़ाया जा रहा है ?? ऐसी गलतियों से लड़ना चाहता हूँ। लड़ रहा हूँ।

मन की बात है , अभी ख़त्म नहीं हुई ! किसी का अपवाद किसी भी ज्येष्ठ से करने से क्या आप या मैं परोक्ष रूप से लाभान्वित होंगे? क्या मैंने या आपने कभी ऐसा किया है ? अपने स्वार्थ के लिए दूसरों का अपयश करने का प्रयास क्या हम करते हैं ? यदि हाँ , तो अपने स्वार्थ सिद्धि का यह सबसे निकृष्टतम उपाय है। आप या मैं सर्वोत्तम नहीं तो क्या, दूसरे को कलंकित कर दें तो ज्येष्ठ के सामने हम खुद ही सर्वोत्तम हो जाएँ। ऐसे दूषित स्वार्थ से लड़ना है । सिर्फ अपने स्वार्थ के लिए जीने के विरुद्ध लड़ना है। लड़ रहा हूँ।

पार्थिव चीज़ों के प्रदर्शन का मूक दर्शक बनता जा रहा हूँ। अपने व्यवहार योग्य सामग्री या फिर वाहन और आवास गृह के अवांछित प्रदर्शन के मोह से बचना चाहता हूँ। यह सारी सम्पत्तियाँ अगर मेरे पास हैं, तो भी यह मेरी सफलता का मापक नहीं है और कभी होना भी नहीं चाहिए। मेरी कार्य क्षमता से अगर मैं अपने कर्म क्षेत्र में या समाज में बिना दिखावे के कोई भी सूक्ष्म मगर कारगर बदलाव लाने में सक्षम हो रहा हूँ तो वही मेरी सच्ची सफलता है। वाहन, आवास, विदेश यात्रा इत्यादि मेरी सफलता नहीं मेरा "चयन" है !! इस बात को कभी न भूलने के लिए लड़ रहा हूँ ! शायद कभी हार रहा हूँ, पर लड़ रहा हूँ !

क्या मैं किसी को सिर्फ अपने प्रयोजन के समय ही याद कर रहा हूँ? जो व्यक्ति मेरे लिए महत्वपूर्ण है, उसे क्या भगवान का दर्ज़ा दे रहा हूँ ? और जब वह मेरे काम का नहीं रहा, तो क्या उसे खाये हुए केले के छिलके की तरह दूर फेंक रहा हूँ ? शायद मैं ऐसा नहीं कर

रहा, लेकिन हर जगह ऐसा होते हुए देख रहा हूँ। मैं ऐसा अनैतिक कार्य कभी न करूँ, इसके लिए अपने विवेक को प्रशिक्षित कर रहा हूँ। इस मामले में मैं काफी हद तक जीत रहा हूँ। सदैव लड़ रहा हूँ !

हर क्षेत्र में दिखावे का भरमार देख रहा हूँ। समाज सेवा के जरिये किसी पीड़ित को सहायता देने से लेकर अपने छोटे से छोटे कर्म को भी सिर्फ दिखावे के लिए निष्पादित किया जाना अब एक विचारधारा बनती जा रही है। प्रवृत्ति ऐसी हो रही है कि मैं जो कर रहा हूँ अगर उस पे कोई ताली नहीं बजा रहा या फिर कोई देख भी नहीं रहा, तो उस काम से क्या लाभ ? स्वार्थरहित कार्य अब किसी विलुप्त प्राणी से कम नहीं है। उस लुप्त परम्परा को क्या हम पुनर्जीवित नहीं कर सकते ? लड़िए , मैं लड़ रहा हूँ !

अंत में एक और मन की बात। निर्वाचन का मौसम है। लोग जन प्रतिनिधियों के चयन के लिए उत्साहित हैं। उच्च शिक्षित लोग भी अपना वोट देने के लिए किसी को मन ही मन चयन करते हैं। लेकिन क्या ज्यादातर ऐसा हो रहा है, कि हम जिसको जानते नहीं, पहचानते नहीं, उनसे कभी बात नहीं की, उनके चरित्र के बारे में कोई ज्ञान नहीं, उनको हम सिर्फ संवाद माध्यम के जरिये या दूसरों के कहने पर ही अच्छा मान लेते हैं। अपने सामने रहने वाले प्रतिवेशी को, जिन्हें हम हर रोज़ देखते हैं, हर रोज़ बात करते हैं, उन्हें शायद अच्छा नहीं मानते। उनका मूल्यांकन हम हर पल करेंगे और उनके महत्वहीन दोष को तीन लोगों के सामने छिद्रान्वेषण भी करेंगे। लेकिन जिनको हम कभी नज़दीक से नहीं जान पाए, उनको अपने और समाज के प्रतिनिधि के रूप में स्वीकार करने से पहले क्या हम दो बार भी सोचते हैं ?? सामाजिक माध्यम, जिसे सोशल मीडिया कहा जाता है, अपने अपने पक्ष को व्यक्त करने का एक कारगर साधन है। सोशल मीडिया में किसी राजनैतिक दल या नेता को अगर एक बार समर्थन दे दिया तो कई लोग उससे पीछे नहीं हट पाते। दूसरे दल या नेता के नकारात्मक कार्य या स्वभाव को ढूंढने और प्रचार करने में लग जाते हैं। और ऊपर से जिस दल या नेता को समर्थन दिया, अगर उनकी कोई ख़राब चीज़ सामने आ गयी तो चुप बैठ जाते हैं । इसका मूल कारण यह होता है कि हममें से कई लोग उन दलों और नेताओं के नीतियों से शुद्ध रूप से परिचित नहीं होते। सिर्फ संवाद या अन्य माध्यमों के जरिये थोड़ा बहुत जान कर एक प्रतिरूप का मन में अंकन कर लेते हैं । क्या कईं लोग किसी प्रतिनिधि का इसलिए भी समर्थन करते हैं कि उनके चुनाव जीतने पर खुद के स्वार्थ की सिद्धि की जा सके ?? समाज और देश का सही विकास तभी मुमकिन है जब शिक्षित लोग स्वयं समर्थित दलों और नेताओं का निष्पक्ष निरीक्षण और मूल्यांकन करेंगे । मन ही मन या फिर प्रकाश्य रूप में जिनका आप विरोध कर रहें हैं , उनका मूल्यांकन बंद कीजिये और आपके द्वारा समर्थित जन प्रतिनिधि और जन सेवकों को उत्तरदायी बनाइये। इससे उनमें सुधार होगा और समाज और देश का भी विकास होगा। लड़ते रहिये, मैं लड़ रहा हूँ !

बैंकों का निजीकरण - आशंकाएं एवं संभावनाएं

✍ जितेन्द्र प्रताप सिंह
मुख्य भू-भौतिकविद
हाइड्रोकार्बन महानिदेशालय, नोएडा

भारतीय अर्थव्यवस्था एवं सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक

हम सभी को यह भली भाँति विदित है कि किसी भी देश की संपन्नता और प्रगति का आधार स्तम्भ उस देश की अर्थव्यवस्था होती है और अर्थव्यवस्था का सुचारु संचालन ही इस बात का निर्णायक होता है कि देश विकास की ओर अग्रसर होगा या अनेक प्रकार के सामाजिक और आर्थिक विसंगतियों को झेलेगा।

जब भी अर्थव्यवस्था की बात आती है तो भारतीय बैंकिंग व्यवस्था एक संबल की तरह अर्थव्यवस्था को थामे नजर आती है। साधारणतया देखा जाए तो भारतीय अर्थव्यवस्था एक बाजार से संचालित अर्थ व्यवस्था है और बैंकों का इसमें प्रत्यक्ष हस्तक्षेप कम है परंतु ये भी उतना ही सच है कि बाज़ार की तेजी और मंदी भारतीय रिजर्व बैंक एवं अन्य राष्ट्रीयकृत बैंकों द्वारा लिए गए सुधारात्मक कदमों द्वारा संचालित होती है यदि भारतीय बाजार एक विशाल उन्मुक्त हाथी है तो निश्चित ही सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक उस हाथी को संयमित रखने वाले कुशल महावत हैं।

राष्ट्रीयकरण के बाद से सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों ने सामाजिक और आर्थिक क्षेत्र में आधुनिक भारत के नीव रखी है इसलिए यदि राष्ट्रीयकृत बैंकों को भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ कहा जाए तो कोई अतिशियोक्ति नहीं होगी।

भारतीय परिप्रेक्ष्य में निजीकरण की विवेचना

सैद्धांतिक रूप से एवं भाषा की सरलता के हिसाब से हम किसी भी अर्थव्यवस्था को समाजवादी, पूंजीवादी और मिश्रित अर्थव्यवस्था में विभक्त कर सकते हैं जिनको संक्षिप्त में निम्नगत बिंदुओं में समझा जा सकता है

- **समाजवादी अर्थव्यवस्था** बाजार का संचालन पूर्णरूप से सरकार के विवेक और जनहितकारी नीतियों पे आधारित होती है। ऐसी व्यवस्था मूलतः व्यापार को फायदे नुकसान से अलग रख के सामाजिक उत्तरदायित्वों के निर्वहन के लिए होता है। समाजवादी अर्थव्यवस्था में सरकार का अर्थ व्यवस्था में महत्त्वपूर्ण हस्तक्षेप होता है।
- **मिश्रित अर्थव्यवस्था** समाजवाद एवं पूंजीवाद का एक अध्यानित मिश्रण होता है जो की समाज के लिए हितकारी होने के साथ-साथ वैश्वीकरण के इस दौर में प्रतिस्पर्धी वातावरण भी तैयार करता है। ये व्यवस्था समाज के विकास के साथ छोटे उद्यमियों एवं औद्योगिक घराने को विकास का समान अवसर प्रदान करती है।
- **पूंजीवादी अर्थव्यवस्था** में सरकारों का अर्थव्यवस्था में लेशमात्र हस्तक्षेप होता है एवं अर्थव्यवस्था मुख्यतः निजी औद्योगिक घरानों एवं पूँजीपतियों के विनिवेश और लाभ हानि की परिकल्पना पे चलती है। इस व्यवस्था में प्रायोगिक दृष्टि से सामाजिक उत्तरदायित्व की परिकल्पना गूढ़ हो जाती है एवं आर्थिक शक्तियों का केन्द्रीकरण होता है।

ऐसा माना जाता है कि व्यापार लोकतान्त्रिक सरकारों का चरित्र नहीं होता इसलिए भारतीय अर्थव्यवस्था मुख्यतः मिश्रित प्रकृति की है, परंतु उदारीकरण के पश्चात दिनों दिन पूंजीवाद और समाजवाद के इस मिश्रित व्यवस्था का संतुलन पूंजीवाद की तरफ झुकता प्रतीत हो रहा। संक्षिप्त में कहें तो वैश्वीकरण के इस दौर में विश्व बाजार में अपनी दमदार छवि पेश करने के लिए आवश्यक निधि बिना पूंजीवादी निवेश के संभव नहीं है, इसलिए बहुत से क्षेत्रों में निजीकरण एक आवश्यकता के रूप में उभर कर सामने आई है। हालाँकि निजीकरण आज के परिप्रेक्ष्य में एक आवश्यकता प्रतीत होती है। परंतु इसका चरणबद्ध तरीके से एवं कुछ सीमित क्षेत्रों में अंगीकरण ही लंबी दौड़ में सहायक होगी।

निजीकरण एवं भारतीय बैंक

एक बात जो पूर्णतः स्थापित है कि निजीकरण बहुत से क्षेत्रों में आज एक आवश्यकता बन के उभरा है परंतु ये बहुत ही मुश्किल सवाल रहा है कि क्या सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में निजीकरण एक सही निर्णय रहेगा ? इस विषय पर बहुत से मतावलंबी है जिनके पक्ष और विपक्ष में अपने - अपने तर्क हैं। निश्चित रूप से किसी ठोस नतीजे पर मात्र परिकल्पनाओं के माध्यम से पहुंचना मुमकिन नहीं है परंतु हम एक तुलनात्मक अध्ययन के माध्यम से इसके संभावित लाभ - हानि पर मंथन अवश्य कर सकते हैं।

भारतीय बैंकों का निजीकरण-संभावनाएं एवं परिकल्पनाएं

निजीकरण को लेके सामान्य जनमानस में अलग-अलग विचार है पर बैंकों के निजीकरण पे जो एक आम धारणा है वह यह है कि बैंकों के निजीकरण के बाद बैंकों की सेवा की गुणवत्ता में भारी सुधार आएगा। परंतु अन्य बहुत सी बातों की तरह यह मात्र एक संभावना ही बन कर रह सकती है। बैंकों के निजीकरण से क्या संभावनाएं हैं और क्या मात्र परिकल्पनाएं रह जाएंगी वो हम निम्न बिन्दुओं में समझ सकते हैं -

1. भारतीय बैंकों में सरकारी भागीदारी बहुत बड़े अनुपात में है जो कि एक तरह से भारत सरकार की पूंजी को अवरुद्ध करके रखे हैं, निजीकरण या विनिवेश भारत सरकार को फौरी रकम मुहैया कराएगा जो कि सरकार अन्य सामरिक जरूरत के मदों में खर्च कर सकती है । निश्चित ही भारत सरकार के लिए निजीकरण एक अच्छी संभावना ले कर आएगी।
2. निजीकरण या विनिवेश निश्चित रूप से आर्थिक गतिविधियों में हलचल प्रदान करेगा जो कि लघु एवं मध्यम अवधि तक अर्थव्यवस्था, रोज़गार और कर-राजस्व पर लाभकारी प्रभाव पड़ेगा। इसका शेयर बाजार पर भी अनुकूल प्रभाव पड़ेगा, जो कि निजीकरण की अच्छी संभावना को दर्शाती है।
3. निजीकरण से भारतीय बैंकों की सेवा गुणवत्ता बढ़ सकती है ऐसी संभावना प्रायः जताई जाती है परंतु यह बात केवल एक परिकल्पना साबित हो सकती है क्योंकि सेवा की गुणवत्ता कार्य के बोझ से सीधे जुड़ी होती है और बहुत संभव है यदि बैंकों में कर्मचारियों की कमी को नजरअंदाज किया गया तो निजीकरण से सेवा गुणवत्ता पर कोई फर्क नहीं पड़ेगा।
4. बाजार एकाधिकार वाली बहुत सी आवश्यक सेवाओं जैसे पेट्रोलियम आदि से शक्ति का विकेन्द्रीकरण होगा जो कि स्वस्थ्य प्रतिस्पर्धा को जन्म देगा जो कि निजीकरण की अच्छी संभावना को दर्शाता है परंतु बैंकों में पहले से ही स्वस्थ प्रतिस्पर्धा है अतः बैंकों के परिप्रेक्ष्य में विकेन्द्रीकरण केवल एक परिकल्पना साबित हो सकता है ।
5. घाटे में चल रहे बैंकों में जोखिम का बटवारा निजीकरण या विनिवेश के माध्यम से किया जा सकता है जो कि पूर्व में बैंक को स्वयं या सरकार को नए निवेश के रूप में झेलना पड़ता था ।
6. निजीकरण के पश्चात इसकी प्रबल संभावनाएं हैं बैंकों में कॉर्पोरेट लोन के लिए राजनैतिक दखलंदाजी कम हो जाए और ऐसे लोन के अनावश्यक नुकसान से बैंक को बचाया जा सके ।

भारतीय बैंकों का निजीकरण -आशंकाएं

निश्चित रूप से निजीकरण अर्थव्यवस्था के लिए उत्प्रेरक का काम कर सकता है परंतु सारी आशंकाओं के बीच यह भी तय है कि निजीकरण बहुत से ऐसे यक्ष प्रश्न छोड़ेगा जिसका जवाब देना किसी पूंजीपति या सरकार के लिए आसान नहीं होगा।

1. बैंकों का निजीकरण कभी भी समस्या का समाधान नहीं हो सकता क्योंकि सार्वजनिक क्षेत्र में बैंकों की निःस्वार्थ सेवा बिना किसी लाभ या हानि का प्रश्न उठाए किसी भी निजी संस्था के लिए कर पाना मुश्किल है क्योंकि निजीकरण का प्रथम उद्देश्य आमदनी होगा ना की सामाजिक उत्तरदायित्व ।
2. जिस सेवा की गुणवत्ता को निजीकरण का एक प्रमुख आधार माना जा रहा, बहुत संभव है कि उन सेवाओं का शुल्क सबके लिए वहन करना संभव ना हो।
3. बहुत संभव है कि सरकार की लोक हितकारी सेवायें जो अभी तक सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक सुचारु रूप से चला रहे थे निजीकरण के पश्चात ये सेवाएं बैंक की प्राथमिकता ना रह पाए और सरकार को इसके लिए निजी क्षेत्र के बैंकों को भारी भरकम शुल्क चुकाना पड़े।
4. निजीकरण के पश्चात भारत सरकार को एक प्रत्यक्ष नुकसान भारतीय बैंकों में निवेश के फलस्वरूप मिलने वाले लाभांश का बंद हो जाना होगा ।
5. निजीकरण के पश्चात बैंकों के लिए एक व्यावहारिक एवं असरदार नियंत्रण नीति बनाना और उनका पालन करवाना एक चुनौतीपूर्ण कार्य रहेगा ।
6. बैंकिंग के कार्यकलाप से लेकर कर्मचारियों के कार्य मूल्यांकन में पारदर्शिता निश्चित रूप से घटेगी जो की बहुत संभव है अन्य नीति विरुद्ध व्यवहार को तार्किक बनाएगी ।
7. आरक्षण का प्रावधान सिर्फ सरकारी सेवा में होता है, निजी क्षेत्र में आरक्षण का प्रावधान नहीं है तो आरक्षण की नीति पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा| ऐसे में निजीकरण आरक्षित वर्ग को मुख्य धारा में लाने के प्रयासों पर भी असर डालेगा |

बैंकिंग निजीकरण आवश्यकता या मजबूरी ?

बैंकों का निजीकरण मौजूदा सरकार के प्राथमिकताओं में से रहा है परंतु ये सरकार को भी पता है की महामारी के मुश्किल परिस्थिति

में जो योगदान बैंकों ने दिया है वो सराहनीय है। वित्त मंत्रालय ने विभिन्न सोशल मीडिया मंच से इसकी पुष्टि की है कि राहत पैकेज के वितरण से लेकर अनुदान वितरण तक सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों ने निजी क्षेत्र के बैंकों से बहुत ही बेहतरीन काम किया है।

लेकिन, मौजूदा स्थिति में वित्तीय जरूरतों से निपटने के लिए सरकार के पास निजीकरण ही सबसे आसान तरीका है। हालाँकि निजीकरण से संबंधित अभी कोई पुष्ट खबर नहीं है पर मौजूदा प्रिन्ट मीडिया में प्रचारित हो रही खबरों के बीच यदि ये प्रश्न उठता है कि कौन से उपक्रमों का निजीकरण करना चाहिए या और किसका नहीं तो मेरा मानना है की जो सेवा हमें जनमानस तक पँहुचानी हो उसका कभी भी निजीकरण नहीं करना चाहिए और सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक एक ऐसी ही सेवा संस्थान है जिनका जनमानस की सेवा और मुख्य धारा में समावेशन की दृष्टि से राष्ट्रीयकरण किया गया था। भारतीय सामाजिक ढांचा आज भी इतना सुदृढ़ और समान नहीं है कि बैंकों का निजीकरण करके सामाजिक उत्तरदायित्व के मूलमंत्र की बलि चढ़ाई जाए। हमारा समाज अभी इतना परिष्कृत नहीं हुआ है कि वो स्वयं को बिना किसी सरकरी तंत्र के सहयोग बिना मुख्य धारा में जोड़ सके। मौजूद परिस्थिति को देखते हुए बैंकों का निजीकरण से ज्यादा प्राथमिकता बैंकों के सुदृढ़ीकरण पे देने चाहिए। आखिर में ये लिखते हुए अपनी लेखनी को विराम देना चाहूँगा कि देशहित में सरकार जो भी फैसला लेगी, इस देश के एक ऊर्जा सिपाही निश्चय ही अपने कर्तव्य का निर्वहन पूरी निष्ठा से करेंगे एवं देश की आर्थिक प्रगति में अपना योगदान जारी रखेंगे।

❑

खाद्य संयोजन (Food Combination)

✍ **निधि जोशी**
आश्रित - रितेश मोहन जोशी
के. जी. बेसिन, काकीनाड़ा

अच्छे स्वास्थ्य का एक रहस्य केवल अच्छा भोजन या समय पर खाना ही नहीं है। अपितु भोजन का संयोजन भी है, जो इसे स्वस्थ बनाता है।

कई बार, हम दो खाद्य पदार्थो को साथ मिलाकर खाते हैं जो इसे स्वादिष्ट तो बनाता है। जैसे पराठा-अचार, ब्रेड-जैम, दूध-जलेबी और सबको पसंद भी है, लेकिन क्या यह स्वास्थ्यवर्धक भी है?

क्या हम जानते हैं कि सही भोजन संयोजन क्या है? आइए खाद्य पदार्थों के स्वस्थ संयोजन पर एक नज़र डालें और यह भी कि कौन से संयोजनों से बचा जाता है।

सही खाद्य संयोजन:

सेम और विटामिन युक्त भोजन

बीन्स (सेम) प्रोटीन और आयरन लौह पदार्थ से भरपूर होते हैं, जब उन्हें विटामिन से भरपूर सब्जियों के साथ जोड़ा जाता है, उदाहरण के तौर पे अंकुरित दाल(स्प्राउट्स), पालक, आलू, आदि; ये सब वजन घटाने के लिए इसके सहायक के रूप में अच्छी तरह से मदद करते हैं और चूंकि वे लौह पदार्थ में भी समृद्ध होते हैं, इसलिए वे विटामिन की उपस्थिति में बेहतर अवशोषित हो जाते हैं।

काली मिर्च और हल्दी

हल्दी में एक सक्रिय यौगिक (कम्पाउंड) करक्यूमिन होता है, जिसमें सूजन-रोधी (एंटीइन्फ़्लेमेंसन) गुण होते हैं। यह शरीर द्वारा स्वाभाविक रूप से अवशोषित नहीं होता है; जब इसका सेवन काली मिर्च के साथ किया जाता है, तो अवशोषण की क्षमता बहुत बढ़ जाती है। हल्दी-दूध एक बेहतरीन संयोजन है। काली मिर्च डालकर इसे और भी अच्छा बनाया जा सकता है।

ब्रोकोली और टमाटर

टमाटर में एंटीऑक्सिडेंट होते हैं, और ब्रोकोली में फाइटोकेमिकल्स होते हैं; डॉक्टर द्वारा इसे कैंसर से लड़ने वाले संयोजन को एक साथ खाने की सलाह दी जाती है,

फल और मेवे

यदि आप मेवे और बीजों (सीड्स) के साथ एक फल जैसे सेब लेते हैं, तो यह खून में सर्करा की मात्रा को नियंत्रित करने में सहायक होती है और मधुमेह के रोगियों के लिए बहुत गुणकारी होता है।

गुड़ और घी

गुड़ लौह पदार्थ, आवश्यक असंतृप्त अम्ल (फैटी एसिड) से भरपूर

होता है और इसमें पोटाश (पोटेशियम) भी होता है और घी के गुणों से सभी अवगत है। यह संयोजन (सीमित मात्रा में) दोपहर के भोजन के बाद लाभदायक होता है।

भुना हुआ चना और गुड़

चना आवश्यक विटामिन, रेशे (फाइबर) में समृद्ध है और पाचन क्रिया को सुधारने में मदद करता है। इसमें प्रोटीन की उच्च मात्रा होती है और यह कई तरह से स्वास्थ्य लाभ प्रदान करता है। गुड़ के साथ यह संयोजन एक उत्तम भोजन बनाता है। रक्तहीनता (ऐनेमिक) से पीड़ित मरीज़ों के लिए अत्यधिक गुणकारी होता है।

इन खाद्य संयोजनों से बचे

कैल्शियम और लौह पदार्थ

इन दोनों को एक साथ नहीं लेना चाहिए क्योंकि ये शरीर में अवशोषण को रोकते हैं।किशमिश, खुबानी, आदि सूखे मेवे आयरन से भरपूर होते हैं और इनका सेवन दूध के साथ नहीं करना चाहिए। इनके परिशिष्ट (सप्लीमेंट) भी साथ में नहीं लेने चाहिए।

दही और फल

दही में कई जीवाणु (बैक्टीरिया) होते हैं, जो फल की सरकरा के साथ मिलके कभी-कभी संयोजन विष और एलर्जी पैदा कर सकते है। वे एंजाइमों में भिन्न होते हैं इसलिए इसे पचाना मुश्किल हो जाता है।

अंडा और मुर्गा

अंडा और मुर्गा दोनों ही समृद्ध प्रोटीन के स्रोत हैं। जब दोनों को एक साथ खाया जाता है तो वे आसानी से पचते नहीं हैं और अम्लता (एसिडिटी) पैदा कर सकते हैं क्योंकि वे पेट के लिए भारी होते हैं।

दूध और केला

यह एक सामान्य संयोजन है और सभी के द्वारा पसंद किया जाता है। परन्तु दूध और केले का मिश्रण पाचन के लिए भारी होता है। इस संयोजन को काम करने योग्य बनाने के लिए, या पाचन को बढ़ावा देने के लिए एक चुटकी दालचीनी या जायफल*पाउडर मिलाया जा सकता है। (*बस एक छोटी सी चुटकी। अधिक मात्रा में यह मतिभ्रम (हेलुसीनेशन) की स्थिति उत्पन्न कर सकता है)।

शराब और मिठाई

शराब और मिठाई भी एक बुरा संयोजन है। शराब चीनी को संतृप्त वसा में परिवर्तित करती है जो शरीर में आसानी से जमा हो सकती है। मिठाई के साथ यह आपके रक्त में ट्राइग्लिसराइड को बढ़ाने में योगदान देता है। मिठाई की जगह हरी सब्जियों या सलाद, एक बेहतर विकल्प होगा।

फलों का रस और दलिया

यह संयोजन स्वस्थ माना जाता है लेकिन यह वास्तव में आपके रक्त शर्करा के स्तर को बहुत बढ़ा देता है।

भोजन और पानी

भोजन के साथ पानी सबसे खराब संयोजन में से एक है। ऐसा इसलिए है क्योंकि पानी उन पेट के अम्ल (एसिड) को पतला करता है जो खाद्य पदार्थ को तोड़ने और उसे पचाने के लिए बहुत ज़िम्मेदार होते हैं

फल और भोजन

फल आसानी से पच जाते हैं जबकि भोजन के पाचन में अधिक समय की आवश्यकता हो सकती है। इसलिए, पके हुए फलों को खाने के पचने तक इंतजार करना पड़ता है। इस समय तक, किण्वन (फेरमेंटेसन) शुरू होता है। इसलिए अपने भोजन के साथ या अपने भोजन के तुरंत पश्चात फल खाने से बचने की कोशिश करें।

पिज्जा और वातित (एरेटेड) पेय पदार्थ

पिज्जा में बहुत सारा स्टार्च और प्रोटीन होता है, जो पाचन की गति को कम करता है, जबकि वातित / फ़िज़ी पेय की उच्च चीनी सामग्री पाचन को धीमा कर देती है।

सामान्य ज्ञान

- यदि आपने अधिक मात्रा में रात का भोजन किया है जिसमें नमक अधिक था। अगले दिन नास्ते में तरबूज की तरह पानी वाले फलों का सेवन करें क्योंकि यह अधिक नमक को निकालने (फ्लश) करने में मदद करता है।
- यदि आपने पिछली रात को बहुत अधिक प्रोटीन का सेवन किया है, तो सुबह में पपीते का सेवन करें, क्योंकि इसमें पेपिन होता है, जो प्रोटीन को तोड़ने में मदद करता है।

आहार विशेषज्ञ एवं परामर्श पोषण विशेषज्ञ

पी.जी.ऍफ़.एंन.(अमेरीका); पी.जी.डी.पी.एच. एंन.; बी.एस.सी.एवं मेटाबोलिक कोच

भारत में हिंदी भाषा का भविष्य

✍ ऋतुराज बोरा
वरिष्ठ सहायक
सामग्री विभाग, दुलियाजान

भाषा विचारों के आदान - प्रदान का सशक्त माध्यम है। भाषा का प्रादुर्भाव और विकास मनुष्य के विकास के साथ - साथ आगे बढ़ा। हमारे देश में यमन, हूंण, मुगल और अंग्रेज आये, साथ ही अपनी संस्कृतियों को भी साथ लाये। इसलिए प्राकृत भाषा में अरबी, फारसी, उर्दू, अंग्रेजी, आदि भाषाओं के शब्दों का समावेश हो गया। जब हम आजाद हुए, उस समय हमारे देश में सरकारी काम काज की भाषा अंग्रेजी थी। अत: देश के सम्मुख बड़ी समस्या थी कि आजादी के बाद हमारे सरकारी कामकाज की भाषा क्या होगा? इसके लिए एक सर्वेक्षण हुआ। सर्वेक्षण से यह बात सामने उभर कर आई कि देश के सर्वाधिक लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषा हिंदी है। अतः संविधान की धारा 343 के अंतर्गत देवनागरी लिपि में लिखी हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया गया। हिंदी की देवनागरी लिपि पूर्णत: वैज्ञानिक है। हिंदी भाषा में जो बोला जाता है, वही लिखा जाता है जिसके कारण संवाद और उसके लेखन में त्रुटियां न के बराबर होती हैं। भाषा विज्ञान के अनुसार हिंदी एक पूर्ण भाषा है। व्यावहारिक दृष्टिकोंण से देखें तो भारतवर्ष में हिंदी बोलने वालों की संख्या अंग्रेजी बोलने वालों की अपेक्षा बहुत अधिक है। अत: हम इसे संपर्क भाषा की संज्ञा देते हैं। जिस भाषा में हम अधिकतम लोगों से सम्पर्क कर सकते हैं वही भाषा सम्पर्क भाषा कहलाने की हकदार है। अत: हिंदी हमारी राजभाषा के साथ साथ सम्पर्क भाषा भी है। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू जी ने कहा था – "राष्ट्र के रूप में हिंदी हमारे देश की एकता में सब से अधिक सहायक है। "

हिंदी भाषा की वर्तमान स्थिति एवं उसके भविष्य के विषय में प्रायः हताशापूर्ण विचार सुनने-पढ़ने को मिलते हैं परंतु वस्तुस्थिति यह है कि आज हिंदी की स्थिति पूर्व से अधिक सुदृढ़ है एवं उसका भविष्य अधिक उज्ज्वल है। किसी भाषा का भविष्य मुख्यतः चार मानकों से नापा जा सकता हैः जनमानस में उस भाषा की प्रतिष्ठा, जीविकोपार्जन हेतु भाषा की उपयोगिता, भाषा के प्रसार माध्यमों की निरावरोध उपलब्धता एवं भाषा में अन्य भाषाओं के आवश्यक शब्दों को समाहित कर लेने की क्षमता। इन चारों ही मानकों पर हिंदी की स्थिति पहले से बहुत अच्छी है।

स्वतंत्रता के पश्चात बीसियों वर्ष तक स्थिति यह रही कि हिंदी बोलने वालों को कोई भी अंग्रेज़ी में बोलने वाला व्यक्ति अपने से श्रेष्ठ लगने लगता था। आई.ए.एस., पी.सी.एस. आदि परीक्षाओं का माध्यम केवल अंग्रेज़ी होने के कारण भी सभी भारतीयों के मानस में अंग्रेज़ी का वर्चस्व था। आज हिंदी बोलने वाला व्यक्ति अंग्रेज़ी बोलने वाले के सामने बिना हीन-भाव की अनुभूति किए अपनी भाषा में बोलना जारी रखता है। जनमानस में हिंदी की प्रतिष्ठा निरंतर बढ़ रही है।

हिंदी के प्रसार हेतु केंद्रीय शासन के विभागों में हिंदी अधिकारी नियुक्त हैं और हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने हेतु हिंदी सप्ताह मनाया जाता है। यद्यपि बहुराष्ट्रीय कम्पनियों में अभी हिंदी के माध्यम से नौकरी पाना सम्भव नहीं है, परंतु जिस प्रकार अमेरिका, यूरोप और चीन भारत में उभरते ग्रामीण मध्यवर्ग में अपना माल बेचने को लालायित हो रहे हैं, वह दिन दूर नहीं जब बहुराष्ट्रीय कम्पनियों में भी हिंदी जीविकोपार्जन का साधन बन जायेगी।

आज का युग कम्प्यूटर का युग है, सूचना तकनीक का युग है। इस क्षेत्र में भी हिंदी किसी से पीछे नहीं है। कम्प्यूटर पर हिंदी सम्बंधित नित नये प्रयोग हो रहे हैं। इसे कैसे सरल और सुलभ बनाया जाये, इस पर विचार किया जा रहा है। अन्य भाषाओं से हिंदी में अनुवाद सम्बंधी समस्या भी कम्प्यूटर पर सुलझ गई है। फोंट आदि की समस्या के निदान हेतु यूनीकोड लाया गया है। अब हम हिंदी में ई मेल आसानी से भेज सकते हैं। कहने का अर्थ है कि अब हम कम्प्यूटर पर हिंदी में आसानी से कार्य कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त टी.वी. चैनलों से प्रसारित कार्यक्रमों से भी हिंदी की लोकप्रियता बढ़ी है। इसका अनुमान इससे लगाया जा सकता है कि जिन सेटेलाइट चैनलों ने भारत में अपने कार्यक्रमों का आरम्भ केवल अंग्रेजी भाषा से किया था; उन्हें अपनी भाषा नीति में परिवर्तन करना पड़ा है।

आज हमारे देश की जनसंख्या लगभग सवा सौ करोड़ है जो दुनिया

के सभी देशों से ज्यादा है। अत: हमारा देश विश्व व्यापार का एक बहुत बड़ा केंद्र है। सारे विकसित देश चीन , जापान , अमेरिका आदि सभी हमारे साथ व्यापार बढ़ाना चाहते हैं। व्यापार में संवाद बहुत ही आवश्यक है। अत: दूसरे देशों के लोग भी हिंदी सीखने में उत्सुकता दिखाने लगे हैं। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विश्व में हिंदी सीखने वालों की संख्या बढ़ी है। 1991 की जनगणना में हिंदी को मातृभाषा घोषित करने वालों की संख्या के आधार पर पाया गया कि यह पूरे विश्व में अंग्रेजी भाषियों की संख्या से अधिक है। इतना ही नहीं , विश्व में हिंदी प्रयोग करने वालों की संख्या चीनी से भी अधिक है और हिंदी अब प्रथम स्थान पर है। उसने विश्व की अंग्रेज़ी समेत अन्य सभी भाषाओं को पीछे छोड़ दिया है। जन सम्पर्क के साथ-साथ यदि हम जन संचार पर नजर डालें तो इसमें टीवी चैनलों एवं फिल्म जगत का योगदान सराहनीय है। एक सर्वेक्षण के अनुसार हिंदी भाषा में बनने वाली फिल्मों की संख्या अन्य भाषाओं में बनने वाली फिल्मों की संख्या से बहुत अधिक है। यही नहीं, हिंदी फिल्मों के गीत लोगों की जुबान पर रहते हैं। हिंदी गीतों की गुनगुनाहट कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक फैली है। इस तरह से सिनेमास्कोप ने हिंदी के प्रचार - प्रसार में महती भूमिका निभाई है। जन संचार का इस तरह से जन सम्पर्क में आना हिंदी के सशक्तीकरण को दर्शाता है।

विगत 15-20 वर्षों से विदेशों में हिंदी का प्रसार तेज़ी से हुआ है: 100 से अधिक विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जा रही है और बाज़ारवादी स्पर्धा में आगे रहने की ललक में किसी-किसी देश में हिंदी में क्रैश कोर्स भी चलाये जा रहे हैं। विश्व हिंदी सम्मेलनों, कवि सम्मेलनों, विश्व हिंदू परिषद द्वारा संचालित प्राथमिक पाठशालाओं एवं संतों के प्रवचनों ने विदेशों में हिंदी के प्रसार में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी है। यू. के. से प्रकाशित पुरवाई, अमेरिका से विश्व विवेक, कैनेडा से हिंदी चेतना एवं ई-पत्रिकाओं में शारजाह की अभिव्यक्ति एवं अनुभूति, कैनेडा की साहित्य कुंज, अमेरिका की ई-विश्वा, भारत में अम्बाला से सम्पादित व अमरीका से प्रकाशित अनहद कृति, आदि बड़ा महत्त्वपूर्ण योगदान दे रही हैं।

फिर भी राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी के लिये अभी बहुत कुछ किया जाना शेष है, यथा हिंदी का यू. एन. ओ. की भाषाओं में प्रवेश, हिंदी को विज्ञान एवं तकनीकी शिक्षा की भाषा बनाना, हिंदी को उच्च न्यायालयों में स्थापित करना, हिंदी को राष्ट्रभाषा के समुचित व व्यावहारिक स्थान पर प्रतिष्ठित करना तथा हिंदी को कम्प्यूटर एवं जीविकोपार्जन की भाषा बनाना आदि। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हिंदी की प्रतिस्पर्धा अंग्रेज़ी, मंदारिन, स्पैनिश, अरेबिक आदि भाषाओं से है जिनके पास हमसे अधिक संसाधन उपलब्ध हैं। हिंदी प्रेमियों को हिंदी की स्वीकार्यता एवं उपयोगिता बढ़ाने के साथ-साथ अन्य भारतीय भाषाओं की अभिवृद्धि के लिये भी सतत प्रयास करते रहना चाहिये। हमारा यह प्रयास ही देश की संस्कृति का अवलम्ब एवं सम्वाहक होगा।

उपर्युक्त विवेचना के आधार पर हम कह सकते हैं कि हिंदी का भविष्य उज्ज्वल है। आज हिंदी लिखने बोलने वालों को हेय दृष्टि से नहीं देखा जाता है। हिंदी का ज्ञान होना अब सम्मानजनक है। सभी क्षेत्रों में हिंदी ने विकास किया है। आज की हिंदी वह हिंदी है जिसने अपने आप में अंग्रेजी, उर्दू आदि भाषाओं के शब्दों को समाहित कर लिया है। उसमें सामंजस्य की सामर्थता है। वह दिन दूर नहीं है जब न केवल भारत बल्कि सारे विश्व में जन सम्पर्क की भाषा हिंदी होगी। ❑

" खुद के लिये जीनेवाले की ओर कोई ध्यान नहीं देता
पर जब आप दूसरों के लिये जीना सीख लेते हैं तो वे आपके लिये जीते हैं। "

- श्री परमहंस योगानंद

जीवन संघर्ष

✍ हिमांशु डांगी
वरिष्ठ प्रबंधक (वित्त एवं लेखा)
लेखा विभाग, राजस्थान क्षेत्र

सुबह के 6 बजे थे और अलार्म की घड़ी अपनी आवाज दे रही थी, साथ ही मां की आवाज भी कानों में जोर-जोर से सुनाई पड़ रही थी, ''मोहन'' उठो ! मोहन उठो ऑफिस नहीं जाना है क्या लेट हो जाओगे। मोहन हड़बड़ाहट में उठा और घड़ी की तरफ देख ओह ! 7.00 बजे की लोकल ट्रेन पकड़नी है अगर ऑफिस टाइम पर पहुंचना है तो, भागो-भागो जल्दी करो, जैसे तैसे किसी तरह ऑफिस टाइम पर पहुंचा तो पता चला कि आज से ऑफिस पर ताला लगा हुआ है, बाहर भीड़ जमा हुई है।

क्या हुआ भाई ! क्या हुआ मोहन का दिल घबराया हुआ वस्तु स्थिति को भांपने के प्रयास में आखिर हुआ क्या। कोरोना महामारी के चलते ऑफिस में अनिश्चित लॉक डाउन की घोषणा छपी हुई थी। अरे भगवान यह क्या हुआ, अब क्या होगा सोचते-सोचते मोहन वापिस अपने घर की ओर निकल गया।

घर वाले स्तब्ध, आश्चर्य चकित भाव से रोज रात को 10.00 बजे पहुंचने वाला मोहन आज 12.00 बजे दिन में ही घर कैसे पहुंच गया। मां कोरोना महामारी के चलते ऑफिस से अनिश्चित काल के लिए बंद घोषित कर दिया है। ऐसे कैसे बंद कर दिया क्या होगा, कैसे होगा, महीने का वेतन कब मिलेगा। पता नहीं बोल कर मोहन अपने कमरे की ओर चला गया।

एक दिन, 2 दिन, सप्ताह में बदल गये और सप्ताह महीने में बदल गये। आज महीने की पहली तारीख थी मोहन बार-बार मोबाइल की तरफ देख रहा था कि सैलेरी का मैसेज आया की नहीं। फिर देखा मैसेज आया। जान में जान आई, परंतु यह क्या आधी तनख्वाह। यहां तो पूरी तनख्वाह में घर का भरण पोषण ठीक से चलता नहीं, आधी में कैसे चलेगा। मां का इलाज, बच्चों की पढ़ाई, यह सब कैसे होगा यही सोच कब आखों से आंसू निकले पता ही ना चला।

अचानक मोहन !!! मोहन !!! मां जोर-जोर से आवाज देते हुए क्या हुआ मां, क्या हुआ। मां गिर पड़ी थी जमीन पर और देख कर लगता है बहुत पीड़ा हो रही है। अस्पताल ले जाने पर पता चला मां की पैर की हड्डी टूट चुकी है दो महीने का आराम देना पड़ेगा।

मोहन सोचते हुए, इस जीवन की माया तो देखो इस कष्ट की घड़ी में यह दिन देखना पड़ रहा है, जैसे तैसे महीना बिता और इस बार कोई तनख्वाह नहीं दी कंपनी ने। एक रूपया भी जेब में नहीं है। मोहन ने पत्नी के नाम FD करवा रखी थी, सोचा था शादी के बाद काम आयेगी। क्या करें जीवन तो जीना है। यह संघर्ष के दिन है, चले जाएंगे। यही सोच मन को संभाल मोहन चला जा रहा था। मन में तनाव के भाव थे पर चेहरा हमेशा शांत, किसी के चेहरे को देख उसके मन का दुख थोड़े ही पता चलता है।

दो महीने बीत गये ऑफिस के खुलने की कोई खबर नहीं, बाहर जा नहीं सकते। दुनिया मानो थम सी गई हो। इतना बेबस मोहन को कभी नहीं देखा। इस वक्त जीवन के पहिये को रूकता हुआ पहली बार देखा। मन सुस्त था लेकिन एक आस थी जीवन गतिशील है, परिवर्तनशील है, नये दिन फिर आयेंगे, नई आस फिर जगाएंगे। हमें तो चलना है, रूकना नहीं है क्योंकि जीवन एक संघर्ष है,जीवन एक संघर्ष है।

एक दिन ऑफिस खुलने का संदेश आ गया, लगा मृत जीवन में जान आ गयी, फिर उठे और भाग चले ऑफिस की ओर। संघर्ष वह भी है और संघर्ष यह भी था।

जय हिंद। ❑

शेल गैस क्रांति

✍ **अभिराम देव शर्मा**
मुख्य भूवैज्ञानिक, भूगर्भ एवं भूभौतिकी विभाग
हाइड्रोकार्बन महानिदेशालय, नोएडा

आधुनिक तेल एवं गैस उद्योग की शुरुआत से ही पेट्रोलियम भूवैज्ञानिकों ने अन्वेषण के लिए पारम्परिक मार्ग ही चुना है जैसे कि: हाइड्रोकार्बन सोर्से शैलों की तलाश करना, आगार (reservoir) शैलों की तलाश करना जहाँ कि हाइड्रोकार्बन इकट्ठा हो सके, एक ट्रैप की तलाश करना और उसके बाद कुएँ का वेधन करना। आज तेल एवं गैस उद्योग एक क्रांति के दौर से गुजर रहा है, जो चट्टानें भूतकाल में सिर्फ सोर्से चट्टानों के महत्त्व की थी आज उन्हें संभावित आगार समझा जा रहा है और अन्वेषण उनके ऊपर केन्द्रित है। जब गैर पारम्परिक संसाधनों की बात की जाती है तो मुख्य बल कार्बनिक शेल (organic shales)की खोज पर दिया जाता है। विश्व के ऊर्जा पटल को शेल गैस ने पूर्णतया बदल दिया है। शेल गैस, शेल चट्टानों में जाने वाली प्राकृतिक गैस है। शेल गैस क्रांति की शुरुआत सयुंक्त राज्य अमेरिका में हुई। शेल गैस को एक संसाधन की तरह सर्वप्रथम फ्रीडोनिया, न्यूयॉर्क में सन 1821 में कम गहरायी पर कम दबाव वाली दरारों से निकाला गया। अमेरिका में क्षैतिज वेधन (horizontal drilling) की शुरुआत सन 1930 और सन 1847 में पहली बार कूप में फ्रेकिंग (fracking) में हुई। सन 1970 में अमेरिका में संघीय मूल्य नियंत्रण के कारण गैस की कमी हो गयी। गैस की कमी पूर्ति करने के लिए संघीय सरकार ने बहुत से आपूर्ति विकल्पों में निवेश किया जिसमें से पूर्वी गैस शेल परियोजना एक थी। सरकार ने तेल एवं गैस उद्योग को शेल गैस के क्षेत्र में अनुसन्धान के लिए आर्थिक मदद व कर छूट का प्रोत्साहन दिया। ऊर्जा विभाग ने निजी कंपनियों के सहयोग से सन 1986 में शेल में पहला सफल वायु वेधित बहु दरार (multi fracture) क्षैतिज वेधन किया। बड़े पैमाने पर क्षैतिज वेधन एवं हाइड्रोलिक फ्रेक्चरिंग ने विश्व में शेल गैस क्रांति को जन्म दिया। यद्यपि पूर्वी शेल गैस परियोजना ने एप्लेशियन तथा मिशिगन बेसिन गैस उत्पादन बढ़ाया फिर भी टैक्स क्रेडिट के आभाव में शेल गैस का उत्पादन अमेरिका में काफी कम रहा जो की अमेरिका के कुल गैस उत्पादन का सिर्फ 1.6% था। शेल गैस उद्योग में क्रांति लाने का श्रेय जोर्ज पी मिचल जो कि एक भूवैज्ञानिक थे को जाता है जिन्हें शेल गैस उद्योग का पिता भी माना जाता है। जोर्ज पी मिचल की

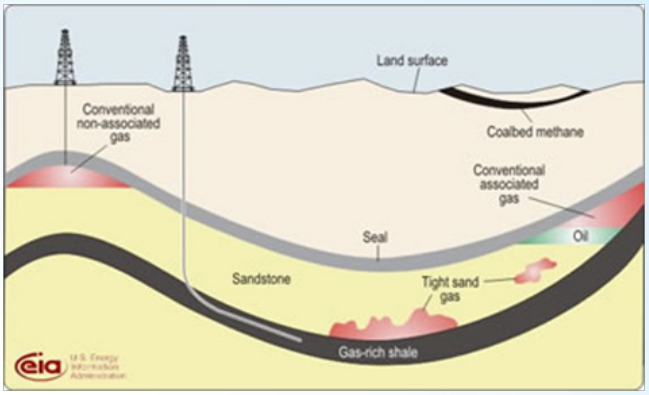

कम्पनी मिचल एनर्जी पहली बार बारनेट शेल में लागत को 4 डॉलर प्रति मिलियन ब्रिटिश थर्मल यूनिट पर लाकर शेल गैस को वाणिज्यिक तौर पर अर्थक्षम (commercially viable)बनाया। मिचल एनर्जी ने सन 1998 में पहली बार वाणिज्यिक तौर पर सफल स्लिक वाटर हाइड्रोलिक फ्रेक्चरिंग एक शेल गैस कुएँ में सम्पन्न की। तब से शेल से उत्पन्न प्राकृतिक गैस ने अमेरिका के प्राथमिक ऊर्जा में योगदान में तेजी से वृद्धि की है। अमेरिका में हुई शेल गैस क्रांति ने दूसरे देशों को भी अपने शेल गैस भंडारों के अन्वेषण के लिए प्रेरित किया है। शेल गैस संसाधनों का अध्ययन करने वाले भूवैज्ञानिकों और अभियंताओं ने ये पाया है कि आगार की बेहतर समझ प्रक्रिया अनुकूलन और तकनीक शोधन में मदद कर सकता है। शेल से हाइड्रोकार्बन उत्पादन के लिए बहुत से स्रोतों से आंकड़ो का संकलन कुओं के बेहतर वेधन और संपादन (completion) के लिए महत्वपूर्ण है।

शेल आगार अभिलक्षण
(shale reservoir characteristics)

शेल, सिल्ट और क्ले आकार के कणों से बनी एक सूक्ष्म कणीय चट्टान है। पृथ्वी का साठ प्रतिशत अवसादी पपड़ी (crust) शेल से बनी है, और ये विश्व के ज्यादातर पारम्परिक हाइड्रोकार्बन निक्षेपों के लिए सौर्स चट्टाने हैं। शेल्स को मडस्टोन भी कहा जाता है क्यूंकि ये मूलतः मड से बनी होती है। शेल, क्लेस्टोन, मडस्टोन में मुख्य विभेद ये है कि शेल बहुत ही महीन परतदार (laminated) और विखंडनीय (fissile) होती हैं, जिससे कि शेल को उनकी

मिनेरालोजी और परिपक्वता के आधार पर आसानी से परतों में तोड़ा जा सकता है। शेल निक्षेप बहुतायत में पाए जाते हैं और उनमें से कुछ निक्षेपों को हाइड्रोकार्बन संसाधनों में विकसित किया जा सकता है। शेल गैस अन्वेषण का मुख्य उद्देश्य उन कार्बनिक समृद्ध अवसादों की खोज करना है जिनमें निक्षेपण के समय बड़ी मात्रा में कार्बनिक पदार्थ सुरक्षित हो गया है जो कि हाइड्रोकार्बन उत्पत्ति में मुख्य भूमिका निभाता है। एक बार उत्पत्ति के बाद ज्यादातर हाइड्रोकार्बन शेल के मैट्रिक्स में बहुत कम पारगम्यता (permeability) के कारण कैद रहता है और प्रवास (migrate) नहीं कर पाता। कार्बनिक समृद्ध शेल फोर्मेशन्स कार्बनिक पदार्थ की अधिकता व कम ऑक्सीजन वाले निक्षेपण वातावरण में बनती है। कार्बनिक पदार्थ जो की मूलतः प्राणी और वनस्पति अवशेषों से बना होता है सागर और झीलों की तल में जम जाता है और दूसरे प्राणियों और बैक्टीरिया का भोजन बन जाता है। जबकि, ऑक्सीजन रहित वातावरण में एनेरोबिक बैक्टीरिया कार्बनिक पदार्थ को पूर्णतया नष्ट नहीं कर पाता और कार्बनिक पदार्थ शेल में परिरक्षित हो जाता है। काला सागर में वर्तमान में निक्षेपण परिस्थितियां शेल गैस संसाधन निक्षेपण के लिए उपयुक्त है। जैसे जैसे अवसाद जमा होते जाते हैं और गहराई में दबते जाते हैं उन पर तापमान और दबाव बढ़ता जाता है और शेल परतदार बन जाती है। समय के साथ अवसादों की मोटाई बढ़ती जाती है और ऊपर निक्षेपित अवसादों के वजन से अतिरिक्त पानी बाहर निकल जाता है और मडस्टोन सघन हो जाता है जो कि लिथिफिकेशन की प्रक्रिया है। धीरे-धीरे कार्बनिक पदार्थ पकना शुरू हो जाता है और केरोजन में बदल जाता है जो कि एक अविलेय पदार्थ होता है जिससे तेल एवं गैस दोनों उत्पन्न हो सकता है। विभिन्न तरह के कार्बनिक पदार्थ अलग-अलग प्रकार के केरोजन को जन्म देते हैं। जब अलग अलग तरह के केरोजन पर जब तापमान और दबाव पड़ता है तो वे विशेष तरह के उत्पाद उत्पन्न करते हैं: तेल, वेट गैस, ड्राई गैस तथा नॉन हाइड्रोकार्बन उत्पाद। दबने और परिपक्व होने की प्रक्रिया के दौरान केरोजन विभिन्न तापमान और दबाव से गुजरता है, जिसमें प्रथम चरण ऑयल विंडो होता है जिसमें तेल प्रवर्त केरोजन से द्रव पेट्रोलियम उत्पन्न होता है या गैस प्रवर्त केरोजन से वेट गैस उत्पन्न होती है और परिपक्वता की यह अवस्था केटाजेनेसिस कहलाती है। इसके पश्चात और गहराई में दबने के साथ केरोजन ड्राई गैस विंडो में चला जाता है और मेटाजेनेसिस की प्रकिया द्वारा बचा हुआ केरोजन और केटाजेनेसिस के दौरान बने भारी हाइड्रोकार्बन गैस में परिवर्तित हो जाते हैं। इसी प्रकार कार्बनिक समृद्ध तथा ड्राई गैस विंडो में उच्च तापमान और दबाव से गुजरी शेल ही गैस शेल अन्वेषण की मुख्य लक्ष्य होती हैं। तथापि, सिर्फ इसीलिए कि एक शेल परिपक्व अवस्था से गुजरी है, जरुरी नहीं कि वह आगार की विशेषता रखती हो। शेल के आगार गुणों को परखने व शेल गैस अन्वेषण में आगे बढ़ने के लिए भूवैज्ञानिक विभिन्न स्रोतों से इकट्ठे किए गए भू रासायनिक, शैलभोतिकी एवं भूयांत्रिक गुणों का अध्ययन करते है।

भू रासायनिक विश्लेषण

शेल गैस उत्पादन योग्य शेल पहचानने के लिए भूवैज्ञानिक विशेष भूरासायनिक गुणों का अध्ययन करते हैं जो कि कोर से प्राप्त की जाती है। शेल संसाधन को सम्पूर्णतया समझाने हेतु टोटल ओरगेनिक कार्बन, गैस आयतन व क्षमता, तापीय परिपक्वता, पारगम्यता तथा खनिजसंगठन मुख्य भूरासायनिक गुण है।टोटल ऑर्गेनिक कार्बन का संसाधन क्षमता से सम्बन्ध निम्नलिखित सारणी में दिखाया गया है:

टोटल ऑर्गेनिक कार्बन, भार %	संसाधन क्षमता
<0.5	बहुत कम
0.5-1	कम
1-2	संतोषजनक
2-4	उत्तम
4-10	अतिउत्तम
>10	अज्ञात

गैस आयतन व क्षमता: गैस केरोजन की सतह पर अधिशोषित तथा शेल की प्राथमिक व द्वितीयक सरंध्रता में मुक्त रूप से रहती है। सम्पूर्ण अव्स्थानिक गैस (TGIP) अधिशोषित एवं मुक्त गैस का योग होती है। आगार के दबाव के आधार पर पहले मुक्त गैस का उत्पादन होता है और रंध्र दबाव के कम होने पर अधिशोषित गैस केरोजन की सतह से मुक्त हो जाती है।

तापीय परिपक्वता एवं हाइड्रोकार्बन उत्पत्ति का संबंध निम्नलिखित सारणी में दिखाया गया है :

वीआरओ %	हाइड्रोकार्बन प्रकार
<0.6	अपरिपक्व
0.6-0.8	तेल
0.8-1.1	वेट गैस
>1.1	ड्राई गैस

पारगम्यता : शेल में पारगम्यता का निर्धारण सबसे कठिन कार्य है, जो की 0.001 – 0.0000001 मिली डार्सी की सीमा में होती है। पारगम्यता आपस में जुड़े हुए रंध्रो, हाइड्रोकार्बन संतृप्तता और खनिजिकी पर निर्भर होती है।

खनिज संगठन : शेल में खनिजों का गूढ़ मिश्रण हो सकता है और विभिन्न खनिजों की विभिन्न मात्रा में पारस्परिक उपस्तिथि एक शेल संसाधन को सफल या असफल बना सकता है।

कोर सेम्पल भूरासायनिक एवं खनिजों के बारे में बहुत सारी जानकारी प्रदान कर सकते हैं लेकिन वो एक विशेष स्थान जहाँ से उन्हें प्राप्त किया गया है तक सीमित रहते हैं। ज्यादातर खनिजों की जानकारी अधोकूप लॉगिंग यंत्रों से प्राप्त शैलभोतिकी के आंकड़ों जिन्हें कोर आंकड़ों से मानकीकृत किया जाता है से प्राप्त की जाती है।

शैल भोतिकी आंकड़े

पारंपरिक आगार के शैलभोतिकी विश्लेषण के लिए प्रयोग किये जाने वाले प्राथमिक आंकड़े शेल फोरमेशन के लिए भी इस्तेमाल किये जाते हैं जैसे : गामा रे, रेजिस्टीवीटी, पोरोसिटी, एवं सोनिक। इसके अलावा न्यूट्रॉन केप्चर स्पेक्ट्रोस्कोपी का भी इस्तेमाल किया जाता है। जिस तरह उत्पादन योग्य पारम्परिक आगार कुछ विशेष गुण प्रदर्शित करता है वैसे ही उत्पादन योग्य शेल बाकी शेलों से अलग गुण प्रदर्शित करती है। गामा रे शेल में कार्बनिक पदार्थ की मात्रा को बता सकता है उच्च गामा रे अधिक कार्बनिक पदार्थ का संकेत होता है। कार्बनिक पदार्थ में सामान्यतया प्राकृतिक रूप से मिलने वाले रेडिओएक्टिव खनिज अधिक होते हैं पारम्परिक आगार की तुलना में। इसी प्रकार गैस शेल में आस - पास की शेल्स की तुलना में ज्यादा रेजिस्टीवीटी पायी जाती है। सामान्यतया पारम्परिक शेल में डेंसिटी पोरोसिटी और न्यूट्रॉन पोरोसिटी के बीच में एक समान वियोग मिलता है जबकि उत्पादन योग्य ओर्गेनिक शेल में अधिक भिन्नता पायी जाती है जिसमें डेंसिटी पोरोसिटी अधिक और न्यूट्रॉन पोरोसिटी कम पायी जाती है और ये शेल में गैस की उपस्थिति के कारण होता है। शेल में कम न्यूट्रॉन पोरोसिटी का कारण ओरगेनिक शेल में आम शेल की तुलना में कम क्ले खनिजों का होना है।

गैर पारम्परिक आगार के गुण विश्लेषण में फोरमेशन निर्धारण बहुत ज्यादा शेल के खनिज संगठन की समझ पर निर्भर करता है। कुछ विशेष खनिजों की उपस्थिति व मात्रा ये बता सकती है शेल आसानी से टूटेगी या फ्रेक्चर होगी। लॉग विश्लेषक इस जानकारी का उपयोग वर्टीकल और क्षैतिज कुओं के प्लेसमेंट और हाइड्रोलिक फ्रेक्चरिंग स्टीम्यूलेशन में करते हैं। स्पेक्ट्रोस्कोपी आंकड़े खनिजों की जानकारी के साथ ही क्ले के प्रकार के बारे में भी जानकारी प्रदान कर सकते हैं। क्ले टाइप का प्रयोग क्ले की फ्रेक्चरिंग द्रव के प्रति उनके प्रति सवेंद्रशीलता और फोरमेशन की प्रकृति समझने के लिए किया जाता है। क्ले टाइप शेल की तन्यता (ductility) को जानने में भी मदद करता है। तन्य शेल आसानी से फ्रेक्चर नहीं होती हैं और प्रोपेंट को अपने में समाहित कर लेती है। शेल में स्मेक्टाईट की उपस्थिति शेल में तन्यता बढ़ जाती है जबकि इलाइट की उपस्थिति से शेल में भंगुरता (brittleness) बढ़ जाती है।

शेल गैस कुओं की दीर्घकालीन उत्पादकता की जानकारी के लिए सोनिक लोग विशेषत: एनआइसोट्रोपिक शेल माध्यम के यांत्रिक गुणों की जानकारी देने वाले यंत्र अति महत्वपूर्ण है। सोनिक यंत्रों से शेल के बल्क मोड्युलस, पोइजन रेशिओ, यंगमोड्युलस, यील्ड स्ट्रेंथ, शियर मोड्युलस और कम्प्रेसिव स्ट्रेंथ की जानकारी प्राप्त की जा सकती है। ये सभी अभियन्त्रिक गुण शेल की हाइड्रोलिक फ्रेकचरिंग के लिए उपयुक्तता जानने के लिए महत्वपूर्ण है। आगार की शैलभोतिकी एवं भूयांत्रिक गुण अभियंताओं और भू वैज्ञानिकों को क्षैतिज कुएं को लैंड करने की सही गहराई के बारे में जानकारी देते हैं।

हाइड्रोलिक फ्रेक्चरिंग

शेल गैस उत्पादन की सफलता बहुत ज्यादा लागत प्रभावी हाइड्रोलिक फ्रेक्चरिंग पर निर्भर करती है। बारनेट शेल की

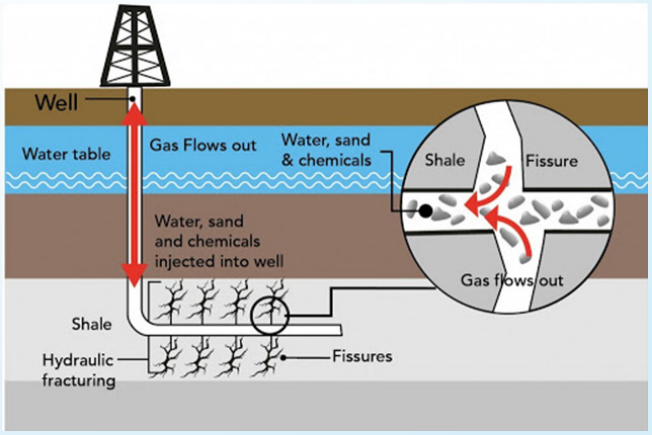

सफलता का श्रेय लागत प्रभावी स्लिक्वाटर फ्रेक्चरिंग को दिया जाता है। फिर भी शेल फोरमेशन के लिए कोई एक उपाय नहीं है, स्लिकवाटर के अलावा जेल और गैस आधारित फ्रेक्चरिंग द्रव भी काफी प्रभावी साबित हुए हैं। शेल गैस के प्रभावी उत्पादन में क्षैतिज कुओं और बहुअवस्था फ्रेक्चरिंग का अहम योगदान है।

निष्कर्षत: शेल गैस अन्वेषण में सबसे महत्वपूर्ण है कि वेधन से पहले भूवैज्ञानिक व अभियंता उन संस्तरों को पहचाने जो उत्तम श्रेणी की आगार हो और जिनकी भूयांत्रिक गुण भी उच्च गुणवत्ता वाले हो उसके बाद ही कुओं को वेधित और सम्पादित किया जाना चाहिए। शेल संसाधन सामन्यतया बहुत बड़े भौगोलिक क्षेत्र में फैले होते हैं, इन विस्तृत भौगोलिक क्षेत्रों में भी पार्श्व दिशा में शेल के गुणों में भिन्नता पाई जाती है, गुणों में इन्ही भिन्नता के आधार बेहतर उत्पादन और हाइड्रोलिक फ्रेक्चरिंग के क्षेत्र पहचाने जा सकते हैं और इन्हीं विशेष गुणों वाले क्षेत्र को स्वीट स्पॉट कहा जाता है।

विश्व के शेल गैस निक्षेप

दुनिया भर में सर्वाधिक शेल गैस का उत्पादन उत्तर अमेरिका में होता है, जिसमें अमेरिका और कनाडा अग्रणी हैं। अमेरिका और कनाडा से परे, शेल गैस अब तक केवल अर्जेंटीना और चीन में ही व्यावसायिक स्तर पर उत्पादित हुई है। भारत में भी शेल गैस अन्वेषण अभी प्रारम्भिक स्तिथि में ही है। केम्बे, कृष्णा-गोदावरी, कावेरी और गोंडवाना बेसिन भारत के कुछ प्रमुख शेल गैस संभावना वाले बेसिन हैं। ❑

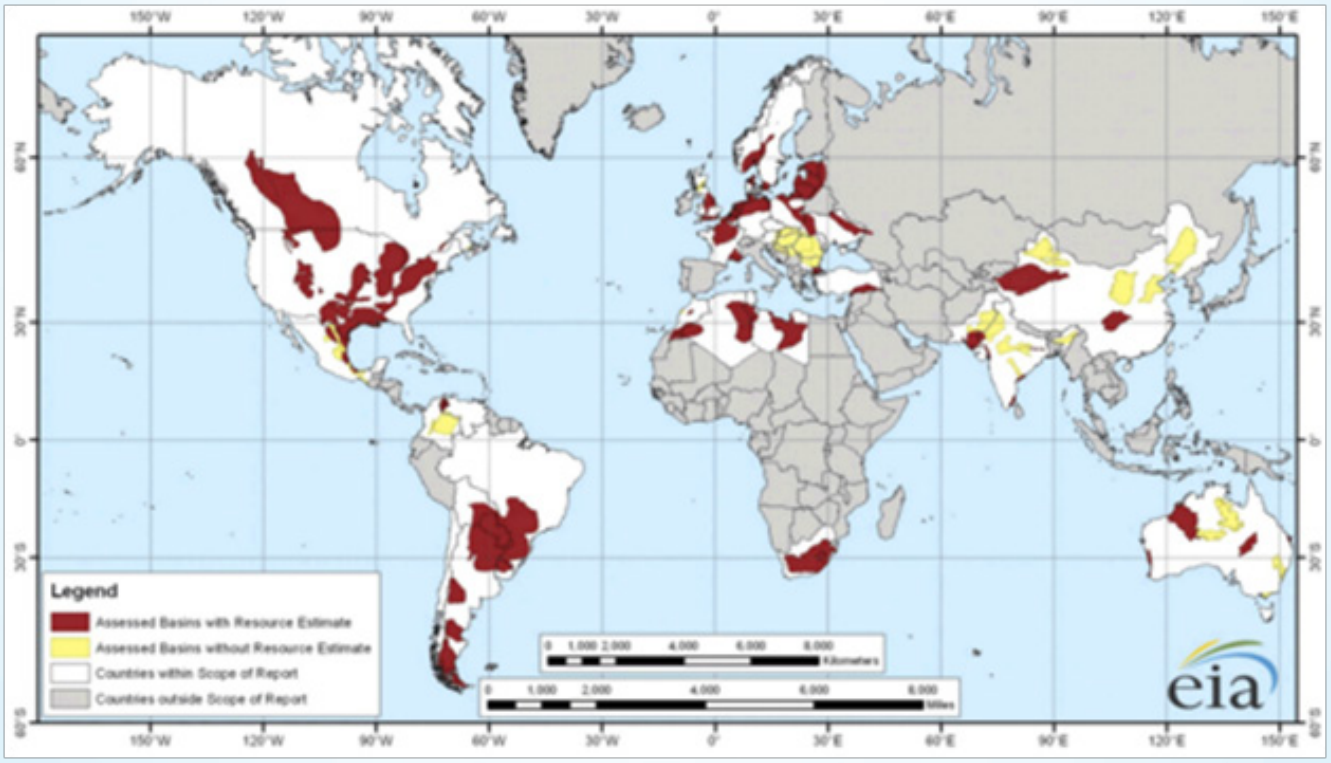

" विश्वास वह पक्षी है जो प्रभात के पूर्व अंधकार में ही
प्रकाश का अनुभव करता है और गाने लगता है| "

- रवींद्रनाथ ठाकुर

फन ओ' फैक्ट्स नाट्य लिपि

✍ **नैना जोशी**
आश्रित - रितेश मोहन जोशी
के. जी. बेसिन, काकीनाड़ा

दृश्य -1: उद्यान
पात्र: केविन और चिंटू

केविन: कैसे हो चिंटू?

चिंटू: (स्ट्रॉबेरी खाते हुए) मैं ठीक हूँ.

केविन: चिंटू तुम स्ट्रॉबेरी खा रहे हो ना?

चिंटू: हाँ क्यों?

केविन: क्या तुम जानते हो कि स्ट्रॉबेरी एकमात्र ऐसे फल हैं जिनमें बीज बाहर की तरफ होते हैं?

चिंटू: अरे ! मैंने कभी सोचा ही नहीं इस बारे में

चिंटू: केविन मुझे मेरे घर के पाठ (होमवर्क)में खाने के बारे में कुछ मज़ेदार तथ्य लिखने हैं, तुम्हें तो बहुत सारे आश्चर्यजनक तथ्य मालूम है, कुछ मेरे साथ साझा कर सकते हो?

केविन: बेशक, मेरे पास खाद्य पदार्थों से जुड़े हुए तथ्यों का एक समूह है: उन्हें ध्यान लगा के सुनो।

- कुछ सेब काले रंग के भी होते हैं।
- पिस्ता वास्तव में फल है।
- चॉकलेट फलों की तरह ही स्वास्थ्यवर्धक है। बेशक, जब कम मात्रा में सेवन किया जाये।
- अंजीर शाकाहारी भोजन नहीं है। (अंजीर के अंदर ततैया होते हैं)।
- केला एक फल नहीं है। फिर यह क्या है? यह एक जड़ी बूटी है।
- बैंगन वास्तव में एक फल है।
- सभी शिमला मिर्च विभिन्न परिवारों से आते हैं।
- गाजर मूल रूप से बैंगनी रंग के होते थे।
- शिमला मिर्च में भी लिंग होता है।

चिंटू: अरे बाबा !, मैं निश्चित रूप से उसके लिए उच्च श्रेणी के अंक प्राप्त करने वाला हूँ, और अगर ऐसा होता है; तो आपके लिए मलाई कुल्फी निश्चित है।

दृश्य 2: केविन का घर
पात्र: केविन और आरव

आरव: नमस्कार मित्र! मैं आपके घर के पास से गुजर रहा था, सोचा मुलाकात करता चलूँ।

केविन: बहुत अच्छा, मैं अपने कुत्ते को स्नान करा रहा था। वैसे आप जानते हैं कि कुत्ते की नाक का छापा मानव के अंगुलियों के छापे जितना ही अनोखा होता है?

आरव: तो क्या कुत्तों के लिए भी आधार जैसा कोई जानकारी का संग्रालय (डेटाबेस) है?

केविन: मैं इसकी पुष्टि नहीं कर सकता अगर ऐसा कोई संग्रालय है, लेकिन मैं आपको जानवरों के बारे में बहुत अधिक रोचक तथ्य दे सकता हूं।

आरव; क्यों नहीं, क्यों नहीं,मैं उन्हें संकलित कर रहा हूं।

केविन: तो ठीक है लिखो।

- झींगे का दिल उसके सिर में स्थित होता है।
- घोंघा लगभग 2 साल तक सो सकता है। (यही कारण है कि वह बहुत आलसी है?)
- स्लग की चार नाक होती है।
- भृंग (बीटल्स) द्वारा गाये गयेगीत में एक आवृत्ति होती है जिसे केवल कुत्ते ही सुन सकते हैं।
- एक शुतुरमुर्ग की आंख उसके मस्तिष्क से बड़ी होती है।
- डॉल्फ़िन मछली पृथ्वी पर रहने वाली दूसरी सबसे होशियार जीव हैं। (बताओ पहला कौन है?)
- इस दुनिया के अधिकांश पेड़ों के लिए गिलहरी जिम्मेदार है।
- जेलिफ़िश मर के भी डंक मार सकती है।

आरव: दिमाग ख़राब करने वाले तथ्य है ये सब, मैं अब समझ गया हूं कि घोंघा इतना आलसी क्यों है, क्योंकि वह बहुत सोता है। स्लग चार नाक के साथ क्या करता है? क्या चार नाक दो नाक से बेहतर हैं? और क्या ऑस्ट्रिच उसकी आंख से सोचता है?

केविन: कुछ घर में अध्ययन करने की आपको भी आवश्यकता है। अपने अध्ययन के पश्चात जानकारी मेरे साथ भी साझा करें।

आरव: निश्चित रूप से करूँगा, लेकिन आपको इतना सब कैसे याद रहता है?

केविन: तथ्यों को इकट्ठा करने का शौक बचपन से है, जैसे कुछ लोग डाक टिकट इकट्ठा करते है, कुछ समाचार पत्र के हिस्से।

दृश्य 3: केविन, रसोई में अपनी माँ के साथ
पात्र: केविन और केविन की माँ (प्रिया)

प्रिया: हैलो बेटा, तुम्हारा स्कूल कैसा था?

केविन; अच्छा था माँ, आपका काम कैसा था?

प्रिया: अस्पताल में एक डॉक्टर के रूप में नौकरी हमेशा थका देती है, विशेष रूप से जब देश कोरोना वायरस नामक महामारी से जूझ रहा हो; लेकिन आप हर दिन कुछ नया सीखते हो।

केविन; आज आपने क्या सीखा माँ?

प्रिया: बेटा तुम जानते ही हो कि इन दिनों डॉक्टरों के ऊपर कार्य भार बहुत बढ़ गया है इसलिए मनोबल बढ़ाये रखने के लिये, हमने भोजनावकाश के दौरान एक छोटी प्रतियोगिता का आयोजन किया। मैंने मानव शरीर के बारे में दिलचस्प तथ्यों के बारे में बात करने का सुझाव दिया, क्योंकि मैं तुम्हारे शौक के लिए और साथ ही आपके आगामी फन। ओ' फैक्ट्स प्रतियोगिता के लिए और अधिक तथ्य एकत्र करना चाहती थी।

केविन: माँ आप भी ??

प्रिया: हाँ बेटा, मैं तुम्हारे साथ निकट संपर्क में रहकर इस शौक से संक्रमित हो गई हूँ। और मेरा विश्वास करो, तुम कुछ तथ्यों को जानकर तुम्हारा मन गदगद हो जायेगा।

केविन: माँ मैं, अब और इंतज़ार नहीं कर सकता, मुझे जल्दी-जल्दी बताओ।

प्रिया:

- मानव नाक एक ट्रिलियन गंध की किस्मों को सूंघ सकती है।
- आपके दिमाग का 75 % हिस्सा पानी है।
- मनुष्य के शरीर मैं एक पूंछ है जो अब अदृश्य है।
- आंखों की पलकें 150 दिनों तक रहती है फिर नई पलकें आती हैं।
- रक्तवसा (कोलेस्ट्रॉल) मुक्त चीजें आपके रक्तवसा के लिए खराब हैं।
- आपके कान और नाक कभी भी बढ़ना बंद नहीं करते हैं।
- आप रात की तुलना में सुबह 1 से मी लंबे होते हैं।

केविन: माँ आपको अंदाज़ा नहीं कि यह सब सुनके मैं कितना उत्साहित हो गया हूँ। मस्तिष्क अगर 75 % पानी है, तो फिर मेरा माथा इतना कठोर क्यों है? इसे गुदगुदा होना चाहिए था?

प्रिया: ऐसा इसलिए है क्योंकि मस्तिष्क आपकी खोपड़ी के अंदर है।

केविन: बात तो सही है। पर पूँछ?

प्रिया: हां ! बड़ी आंत का आखिरी हिस्सा, जिसे कृमिरूप परिशेषिका के नाम से जाना जाता है।

दृश्य 4: शहर में कहीं और, बैठक में।
पात्र: नैना (7 वीं कक्षा की छात्रा) अपने पिता देवदत्त के साथ।

नैना: पापा, मैंने फन 'ओ' फैक्ट्स, नेशनल्स, नामक प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए एक फॉर्म भरा है।

देवदत्त: यह क्या है बेटी?

नैना: पापा, आपको ये पता नहीं है? यह एक बहुत ही लोकप्रिय और मज़ेदार, तथ्य पे आधारित प्रतियोगिता है, जहाँ आपको दिलचस्प तथ्य बताने होते हैं। तथ्य जितने दिलचस्प होंगे, प्रतियोगिता जीतने की संभावना उतनी ही अधिक होगी। इसकी समानता बहुचर्चित प्रतियोगिता "स्पेलबी" के साथ ही की जाती है।

देवदत्त: अरे वाह! हमारे समय में, सामान्य ज्ञान की प्रतियोगिता होती थी। सिद्धार्थ बासु नामक एक व्यक्ति रविवार को दूरदर्शन पर आते थे और कार्यक्रम को क्विज़ समय (क्विजटाइम) कहा जाता है। आजकल यह काफी अलोकप्रिय लगता है।

नैना: हाँ पापा, इंटरनेट की वजह से अब आपकी उंगलियों पर जानकारी उपलब्ध है, लेकिन ये प्रतियोगिता अलग है। मैं आपको कुछ बहुत ही रोचक तथ्य बताऊंगी, अगर वह आपको पसंद आये तो मुझे बताएं, नहीं तो मैं और अधिक शोध करुँगी। बस इस बात का ध्यान रखें कि मुझे प्रतियोगिता जीतनी है।

देवदत्त: ठीक है। बताओ।

नैना: • प्रत्येक सर्दियों में लगभग 1 सेप्टिलियन(एक के बाद बयालिस शून्य) बर्फ के कण आकाश से गिरते हैं।

• सबसे लंबा राष्ट्रगान ग्रीस का है और इसमें 158 छंद हैं।

• दुनिया का सबसे पुराना मनोरंजन पार्क 1583 में खोला गया था और अब भी खुला है।

• आप जानते हैं कि मैं मानचित्र देख रही थी और कुछ देखा। सभी महाद्वीपों का नाम अंग्रेजी के उसी अक्षर से समाप्त होता है जिससे वह शुरू होता हैं।

देवदत्त: देखने दो मुझे, एशिया, यूरोप, अंटार्कटिका, ऑस्ट्रेलिया, अमेरिका, अफ्रीका ओह हाँ !!! तुम बिलकुल ठीक कह रही हो।

नैना: पापा थोड़ा इंतज़ार, अभी और भी है।

• हैरी हौदिनी एक प्रसिद्ध जादूगर ने एक बार एक हाथी जो 4535 किलोग्राम को हवा में गायब कर दिया।

• कोको-कोला मूल रूप से हरे रंग का था।

देवदत्त: आज के लिए यह पर्याप्त है, कल और सुनेंगे। लेकिन एक बात तो सुनिश्चित है। ये सभी तथ्य अद्भुत हैं, मैंने अपने जीवनकाल में ऐसे तथ्य कभी भी नहीं सुने। तुम निश्चित रूप से इस प्रतियोगिता को जीतोगी।

नैना: देखते हैं पापा, पूरे भारत से छात्र होंगे और विजेता विश्व फाइनल के लिए लॉस एंगेल्स (एलए) की यात्रा करेगा। यह यात्रा फन 'ओ' फैक्ट्स फाउंडेशन द्वारा प्रायोजित है, सारा खर्च उन्हीं के द्वारा उठाया जायेगा। पर यह इतना भी आसान नहीं जितना आप समझ रहे हैं ।

दृश्य -5: फन 'ओ' फैक्ट्स के राष्ट्रीय फाइनल का मंच।
पात्र: नैना, केविन, सूत्रधार और श्रोतागण।

सूत्रधार: फन 'ओ' फैक्ट्स के 2020 संस्करण में आपका स्वागत है। मैं सभी मेहमानों और विशेष रूप से प्रतिभागियों और उनके गुरुजनों का स्वागत करता हूं। मैं एक बार फिर से दोहरा दूं, एलए(अमेरिका) की पूर्ण भुगतान यात्रा प्रतिभागी के विजेता घोषित होने की प्रतीक्षा कर रही है।

श्रोता: (ताली बजाते हुए)।

सूत्रधार: मैं अब मंच पर दो निर्णायक प्रतिभागी सुश्री नैना और श्री केविन को बुलाता हूं। कृपया अपने निर्धारित स्थान पर आएं। नियम आपको ज्ञात हैं। यह एक फटाफट दौर है जहां एक प्रतिभागी एक तथ्य शुरू करेगा, और जैसे ही वह समाप्त होता है, दूसरे प्रतिभागी को एक और बताना होगा। प्रतियोगिता तब तक चलती रहेगी, जब तक यह दौर चलता रहेगा और जब एक प्रतिभागी के पास कोई तथ्य नहीं बचेगा, तब प्रतियोगिता समाप्त हो जाएगी। तो महिलाओं और सज्जनों, चलिए शुरु करते हैं इस प्रतियोगिता को।

नैना: क्या आप जानते हैं कि कुत्ते समय का अनुमान लगा लेते हैं?

केविन: क्या आप जानते हैं कि कुत्ते और 2 साल के बच्चे लगभग एक ही भाषा बोलते हैं।

नैना: सालुकी तारीख लगभग 2100 ई.पू. है।

केविन: वैज्ञानिकों का मानना है कि पहला कुत्ता 31700 साल पहले से आया था (साइबेरियन हस्की नस्ल का था)।

नैना: अंतरिक्ष यात्री के पैरों के निशान कम से कम दस करोड़ वर्षों तक चंद्रमा पर रहेंगे।

केविन: बृहस्पति का लाल स्थान सिकुड़ रहा है।

नैना: वैज्ञानिक मानते हैं कि मंगल पर जीवन है।

केविन: अंतरिक्ष में हीरे से बना एक ग्रह हो सकता है।

नैना: अमेरिका का 50% महासागर के नीचे स्थित है।

केविन: प्रशांत महासागर का अर्थ है शांतिपूर्ण महासागर।

नैना: कोरल अपनी खुद की सूरज की रोशनी से देखरेख करने वाला लेप (सनस्क्रीन) का उत्पादन करता है।

केविन: समुद्र में इतना सोना है कि दुनिया के प्रत्येक व्यक्ति को चार किलोग्राम मिल सके।

नैना: शार्क की पानी के अंदर अपनी खुद की चाय पानी की दूकान होती है।

केविन: पृथ्वी का घूमना धीरे-धीरे धीमा हो रहा है।

नैना: जर्मन में पृथ्वी का मतलब जमीन है।

केविन: पृथ्वी को कभी ब्रह्मांड का केंद्र माना जाता था।

नैना: शुरु में संतरा नारंगी रंग का नहीं था पर हरे रंग का था।

केविन: वहाँ है .. वहाँ है ,,, वहाँ है।

सूत्रधार: केविन, समय समाप्त हो रहा है, आपके पास 10 सेकंड बचे हैं।

केविन: .....

सूत्रधार: 3, 2, 1. देवियों और सज्जन, अब हमारे पास फन 'ओ' फैक्ट्स प्रतियोगिता का चैंपियन है जिनका नाम है, नैना जोशी। भारत के 2020 फन 'ओ' फैक्ट्स के चैंपियन है, नैना जोशी। वह एलए (अमेरिका) में क्रिसमस के दौरान वर्ल्ड फन 'ओ' फैक्ट प्रतियोगिता में भारत का प्रतिनिधित्व करेगी। हम सभी उन्हें बहुत-बहुत शुभकामनाएं देते हैं, और उम्मीद करते हैं कि सांता क्लॉस खुद उसे विश्व चैंपियन ट्रॉफी भेंट करेगा।

श्रोतागण: (ताली ताली बजाते हुए)।

केविन:

बहुत-बहुत बधाई नैना, तुम यह प्रतियोगिता की असली हक़दार हो, तुम अब एलए जाओगी, ये लो मेरा संग्रह, ये तुम्हारे काम आएगा।

नैना: केविन, बहुत-बहुत धन्यवाद, मैंने सिर्फ प्रतियोगिता जीती है, पर यह संग्रह मुझे देकर, तुमने मेरा दिल जीत लिया। ये मैं जरूर पढ़ूंगी।

दृश्य-6: एलए को जाने वाला हवाई जहाज़।
पात्र : नैना और अन्य हवाई यात्री।

विमान परिचारिका : मैडम, आप कुछ लेंगी, जूस, चाय ?

नैना: धन्यवाद, अभी नहीं, अभी मैं इस संग्रह को पढ़ लू।

(नैना ने केविन का संग्रह खोला और पढ़ना शुरु किया)

- o नील आर्मस्ट्रांग के बाल 3000 डॉलर में बेचे गए थे।
- o स्कॉटलैंड में बर्फ के लिए 421 शब्द हैं।
- o सहारा रेगिस्तान का केवल एक चौथाई हिस्सा रेतीला है।
- o कुत्तों की नाक से रासायनिक गंध आ सकती है।
- o जिराफ की जीभ 20 इंच तक लंबी हो सकती है।
- o एवरेस्ट पर्वत से भी ऊंची उड़ान मधुमक्खियां भर सकती हैं।
- o दुनिया की पहली उपन्यास वाक्य के बीच में ही समाप्त होती है।
- o केले काली रोशनी के नीचे, नीले चमकते हैं।
- o मधुमक्खियां रंगीन शहद बना सकती हैं।
- o अल्बर्ट आइंस्टीन की आँखें आज भी न्यूयॉर्क में हैं।
- o मम्मियों की आँखों में प्याज पाए गए।
- o अमेरिका में..... zzzz, zzzz, zzzz

विमान परिचारिका : मैडम, मैडम, कुर्सी की पेटी बाँध ले, एल-ए आने वाला है। ❑

कारवार, कयाक में सवार

✍ **मैत्रिका जोशी**
आश्रित - रितेश मोहन जोशी
के. जी. बेसिन, काकीनाड़ा

आधुनिक समय की पीढ़ी में, छात्रों को इन-क्लास लर्निंग और बाहरी लर्निंग दोनों की आवश्यकता होती है। वैज्ञानिक अध्ययनों ने साबित किया है कि एक बच्चे को समग्र विकास की आवश्यकता है। इस बात को ध्यान में रखते हुए, मेरे स्कूल, छात्रों को आदर्श एवं समग्र शिक्षा कार्यक्रम प्रदान कर रहा है। इसलिए, पिछले साल उन्होंने एक शैक्षिक यात्रा के लिए हम सभी को ऐसी यात्रा पे ले जाने का फैसला किया; जिसका उद्देश्य हमारे लिए एक नया कौशल सीखना था, जो जीवन भर हमारे साथ रहेगा और याद रहेगा।

हमारा अभियान मुंबई एयरपोर्ट पर सुबह 5:00 बजे शुरू हुआ। कल; नींद आना मुश्किल था क्योंकि हम सभी इस यात्रा को लेकर बहुत उत्साहित थे। सात दिन अपने सबसे अच्छे दोस्तों के साथ मिलकर समय का आनंद उठाएगी, ये सोचते हुए नींद हमारी आँखों से कोसों दूर चली गई। गोवा के लिए उड़ान अगली सुबह थी। हम सभी दो घंटे पहले विमानपटल पहुंचे ताकि इकट्ठा हो सकें और एक साथ हवाई अड्डे के अंदर जा सकें। हम सभी लोग भेड़ों के झुण्ड जैसे एक कोने में दुबक गए। आँखों में अब नींद थी। कुछ समय बाद माता-पिता अपने बच्चों को अलविदा कहते नज़र आये। मुझे स्पष्ट रूप से याद है, कुछ माता-पिता के चेहरे में राहत के संकेत थे, जबकि कुछ भावुक हो गए और अपना हाथ तब तक लहराते रहे जबतक कि हम हवाई अड्डे के कांच और स्टील की इमारत के अंदर गायब नहीं हो गए। चूंकि हमारा समूह बुकिंग और समूह चेक-इन, इसलिए सुरक्षा जांच तक सभी कुछ जल्दी-जल्दी से हो गया था। बोर्डिंग शुरू होने से पहले हमारे पास नष्ट करने के लिए कुछ घंटे थे। फ्लाइट में सवार होने से पहले के इन 2 घंटों के दौरान, हमने समय किस तरह बिताया? खरीदारी करके, खाना खाके, हंसी मजाक करके। हालांकि उड़ान केवल एक घंटे की थी परन्तु अपने दोस्तों के पास बैठने की और सफर करने की खुशी अनमोल थी।

सुबह 9:30 बजे के आसपास हम गोवा एयरपोर्ट पर उतरे, अपना सामान उठाया और अपनी बस की ओर जाने लगे। बस के समीप हम अपने शिविर के प्रशिक्षकों से मिले और फिर गर्म, स्वादिष्ट पिज्जा ने हमारा स्वागत किया। एक लंबी बस यात्रा के बाद, हम

कर्नाटक की सीमा पर पहुँच गए, जहाँ से हमारा कैंप साइट बस कुछ किलोमीटर ही दूर था। अंत में, हम कारवार पहुँचे जहाँ हमारा कैम्पस स्थित था।

हम सभी को टेंट सौंपा गया था, दो लोगों को एक टेंट आरक्षित हुआ था। सोने के लिए गद्दे और रहने के अन्य साधनों की पर्याप्त व्यवस्था थी, लेकिन यह सब कुछ मायने नहीं रखता था क्योंकि हमारे पास एक सप्ताह का अनुभव, उत्साह और मस्ती भरा होने वाला था। तत्पश्चात हमें समूह परिचय के लिए एक घंटे में लौटने के लिए कहा गया था। हमें यह भी सूचित किया गया कि प्रत्येक दिन हमारे लिए परोसे जाने वाले भोजन और व्यंजनों की रेंज प्रभावशाली होने वाली है; जैसे इतालवी, चीनी, भारतीय, अमेरिकी सब कुछ उपलब्ध होगा। भोजन का नाम सुन के सबके मुँह में पानी आने लगा।

यात्रा का मुख्य आकर्षण, कयाकिंग के कौशल में निपुणता प्राप्त करना था, जो एक शानदार साहसिक खेल था। अगले दिन एक शानदार नाश्ते के साथ शुरू हुआ जिसके बाद कयाकिंग और सुरक्षा उपायों की मूल बातें ध्यान में रखी जानी चाहिए उनके बारे में बताया गया। उन्होंने हमें यह भी सिखाया कि कश्ती को कैसे चलाया जाए, पैडल का उपयोग कैसे किया जाए, पतवार कैसे पकड़नी है और कैसे उसका इस्तेमाल करना है, तत्पश्चात कैंप में कुछ खेल और अन्य गतिविधियों के साथ दिन संपन्न हुआ। अगले दिन का कार्यक्रम था कि हमें सबसे पहले अपनी कश्ती इकट्ठा करनी थी और फिर अपनी यात्रा शुरू करनी थी और लक्ष्य था कि एक छोटे से द्वीप के चारों ओर एक पूरा चक्कर लगाया जाए और कैंपसाइट में वापसी की जाए।

अब वह दिन आ गया था जिस दिन का सबसे ज्यादा इंतजार था, उस दिन काली नदी के तट पर हम बहुत लंबी यात्रा के लिए निकल पड़े थे। काली नदी में कयाकिंग करने का अनुभव अविस्मरणीय था। जो छात्र अतिरिक्त उत्साही थे, वे थोड़ा आगे बढ़कर लगभग अरब सागर को छू गए। चिलचिलाती गर्मी की वजह से कयाकिंग और भी थका देने वाली थी। एक सबक जो मैंने इससे सीखा है, वह है कि आप कयाकिंग करते समय फुल-स्लीव वाले कपड़े पहनें

क्योंकि अगर आप ऐसा नहीं करते हैं तो आपकी त्वचा को धूप से नुकसान हो जायेगा। दिन के 2 बज गए थे, दोपहर का स्वादिष्ट भोजन शिविर में हमारा इंतजार कर रहा था। शेष दिन सिर्फ बातें करने, शिविर की खोजबीन करने, दोस्तों के साथ खेलने आदि में व्यतीत हुआ।

अगले दिन का उद्देश्य जंगल में घूमना था, और छात्रों को दोपहर का खाना पूरी तरह से खुद बनाना था। इसमें थोड़ा और मज़ा जोड़ने के लिए प्रशिक्षकों ने इस 20 मिनट की पैदल यात्रा को 2 घंटे की पहाड़ी यात्रा में बदल दिया। अपने गंतव्य पे पहुंचने के पश्चात, एक बंजर भूमि पे पत्थरों का एक छोटा सा चूल्हा बनाया और बहुत ही बुनियादी भोजन पकाया; दाल, चावल, और सलाद। यह कोई फैंसी भोजन नहीं था, लेकिन इसे पकाने का आनंद बहुत मजेदार था। सब्जियों को काटने से, उन्हें धोने से, चूल्हा बनाने से, और अंत में लगभग 30 लोगों के लिए भोजन बनाने में जो अनुभव प्राप्त हुआ और जो मजा आया, वो आज तक याद है। खाना खाने एवं ज़मीन को साफ़ सुथरा करने के पश्चात शिविर में वापसी की और आनंद की अनुभूति से मन सराबोर हो गया।

शिविर में हमारा आखिरी दिन प्रतिबिंब, समूह चैट और हमारे द्वारा बनाए गए सभी टेंटों को पैक करने में बिताया गया । कारवार में, हमने एक समूह फोटो के साथ यात्रा का समापन किया और वापस गोवा हवाई अड्डे पर आ गए। एयरपोर्ट से शॉपिंग करने के बाद हम वापस मुंबई आ गए। मुंबई हवाई अड्डे के आगमन हॉल में, माता-पिता के चेहरे नज़र आये जो हमारा इंतजार कर रहे थे।

ऑयल, पाइपलाइन मुख्यालय गुवाहाटी द्वारा पूर्वोत्तर भारत में हिंदी के विकास के क्षेत्र में प्रिंट और इलेक्ट्रोनिक मीडिया की भूमिका पर वेबिनार

मीडिया न केवल हमारे लोकतंत्र का एक मुख्य स्तम्भ है बल्कि भाषा को स्थापित करने में प्रमुख भूमिका का निर्वहन भी करता है। पूर्वोत्तर भारत मूलत: मेरी कर्मभूमि रही है और मैंने स्वयं समाचार पत्रों तथा टी वी चैनलों के बदलते रूप को महसूस किया है। पिछले कुछ वर्षों में हिंदी भाषा को लेकर अनेक प्रकार के परिवर्तन देखने को मिले हैं। - यह बात श्री पंकज कुमार गोस्वामी, निदेशक (प्रचालन) ने ऑयल इंडिया लिमिटेड पाइप लाइन मुख्यालय, गुवाहाटी द्वारा वेबेक्स मीटिंग प्लेटफार्म पर 'पूर्वोत्तर भारत में हिंदी के विकास के क्षेत्र में प्रिंट और इलेक्ट्रोनिक मीडिया की भूमिका' विषय पर आयोजित ई संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए अपने वक्तव्य के दौरान कही। इस अवसर पर श्री संदीप गोस्वामी, मुख्य महाप्रबंधक (पाइपलाइन सेवाएं), श्री प्रशांत बोरकाकोती, कार्यकारी निदेशक (मानव संसाधन व प्रशासन) तथा अध्यक्ष नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, दुलियाजान एवं विषय विशेषज्ञ आमंत्रित वक्ता के रूप में पूर्वोत्तर के लोकप्रिय समाचार पत्र दैनिक पूर्वोदय के संपादक श्री रविशंकर रवि जी तथा नार्थ ईस्ट लाइव, गुवाहाटी के समाचार संपादक श्री रंजीत राय जी उपस्थित थे। विषय विशेषज्ञ आमंत्रित वक्ता के रूप में पूर्वोत्तर के लोकप्रिय समाचार पत्र दैनिक पूर्वोदय के संपादक श्री रविशंकर रवि जी ने हिन्दी एवं क्षेत्रीय भाषा भाषियों की साझेदारी पर प्रकाश डालते हुए कहा कि पूर्वोत्तर भारत में हिंदी के विकास के क्षेत्र में प्रिंट और इलेक्ट्रोनिक मीडिया की महती भूमिका एवं चुनौती रही है। शेष भारत अगर पूर्वोत्तर भारत से परिचित हो पाया है अथवा जुड़ रहा है, तो इसके पीछे प्रिंट एवं इलेक्ट्रोनिक मीडिया की बड़ी भूमिका है। पूर्वोत्तर में अपने अनुभवों एवं प्रसंगों को साझा करते हुए आगे कहा कि उलुपी पूर्वोत्तर के महिलाओं की सम्मान का प्रतीक है, जो यह बताता है कि पूर्वोत्तर के लोग सम्मान के साथ जीना जानते हैं। पूर्वोत्तर की भाषा एवं संस्कृति को हिंदी का एक मंच मिला और पूरे देश में सांस्कृतिक एक्य की भावना परिपुष्ट हुई। उन्होंने कहा कि हिन्दी में स्थानीय शब्दों के प्रयोग बढ़ने से हिन्दी भाषा समृद्ध हुई। हिन्दी की पत्र पत्रिकाओं ने पूर्वोत्तर के बारे में पूरे देश को परिचित कराया है। जबकि नार्थ ईस्ट लाइव, गुवाहाटी के समाचार संपादक श्री रंजीत राय ने हिन्दी बेल्ट में पूर्वोत्तर भारत के बारे में अभी भी अधिक जानकारी नहीं है। भारत का पूर्वोत्तर क्षेत्र शेष भारत के लिए वर्जिन है। लेकिन प्रिंट एवं इलेक्ट्रोनिक मीडिया तथा अन्य संचार माध्यमों के कारण परिस्थितियां बदल रही है। सरकार भी पूर्वोत्तर भारत पर विशेष ध्यान दे रही है। इसके कारण पूर्वोत्तर के साथ सौतेला व्यवहार की भावना में कमी आ रही है। उन्होंने कहा कि स्थानीय भाषा को सम्मान देते हुए हिन्दी समृद्ध हो रही है।

श्री प्रशांत बोरकाकोती, कार्यकारी निदेशक (मानव संसाधन व प्रशासन) तथा अध्यक्ष नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, दुलियाजान ने अपने संबोधन में कहा कि दुलियाजान नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति का अध्यक्ष होने के नाते मैं बताना चाहूंगा कि ऑयल इंडिया लिमिटेड के विभिन्न कार्यालय राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन के कार्य के प्रति सदैव गम्भीर रहे हैं। पिछले कुछ समय से पूरे विश्व में कोरोना महामारी का प्रकोप देखने को मिला जिसकी वजह से इस तरह के कार्यक्रम आयोजन में अल्पविराम देखने को मिला। आज इस वेबैक्स प्लेटफार्म के माध्यम से ई सेमिनार का आयोजन एक अच्छी शुरुआत है। ई संगोष्ठी में प्रतिभागियों एवं आमंत्रित अतिथियों का स्वागत करते हुए मुख्य महाप्रबंधक श्री संदीप गोस्वामी ने कहा कि यदि हम ध्यान पूर्वक समझने का प्रयास करें तो पाते हैं कि आज देश-विदेश में हिंदी का प्रचार-प्रसार बढ़ रहा है अनेक बहुराष्ट्रीय कम्पनियां, जिन्हें हिंदी भाषा में काम करने से परहेज था, वो आज अपना व्यवसाय करने के लिए भारत में अपने कार्यालय स्थापित कर रही हैं और उन्होंने इस भाषा की ताकत को समझा है तथा जाना है इसलिए वे विभिन्न प्लेटफार्म पर हिंदी भाषा में काम करने की सुविधा उपलब्ध करा रही हैं। डॉ. विजय मोहन बरेजा ने सफलतापूर्वक ई संगोष्ठी का संचालन किया। उन्होंने ई संगोष्ठी के आयोजन को सफल बनाने में सहयोग देने आए अतिथियों एवं अधिकारियों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि तकनीक की सहायता से नोएडा, जोधपुर, कोलकाता, काकीनाड़ा, दुलियाजान आदि विभिन्न कार्यालयों के अलावा हमारे अलग-अलग शहरों में स्थित पम्प स्टेशनों के सभी कार्मिक एक साथ एक प्लेटफार्म पर जुड़ पाए हैं। उन्होंने जानकारी देते हुए बताया कि गौहाटी विश्वविद्यालय में असमिया संस्कृति साहित्य को लेकर हिन्दी में शोध करने वाले शोधकर्ता को ऑयल इंडिया लिमिटेड पाइपलाइन मुख्यालय द्वारा आर्थिक अनुदान भी दिया जा रहा है।

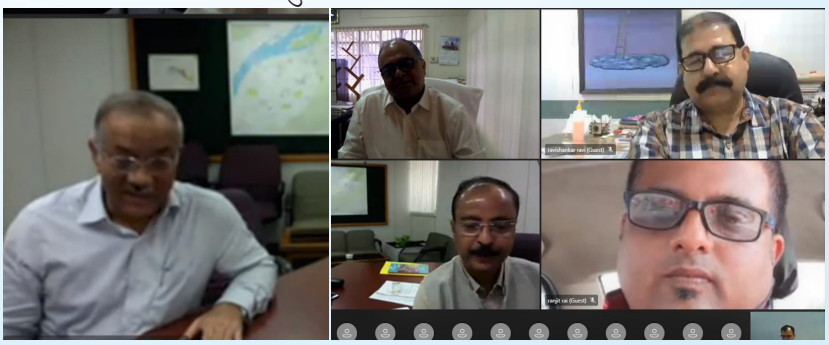

ऑयल इंडिया लिमिटेड के कोलकाता कार्यालय को वर्ष 2019-2020 के लिए "प्रथम राजभाषा शील्ड"

ऑयल इंडिया लिमिटेड के कोलकाता कार्यालय को वर्ष 2019-2020 के लिए नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) कोलकाता की ओर से राजभाषा कार्यान्वयन के लिए "प्रथम राजभाषा शील्ड" तथा डॉ. वी एम बरेजा, उप महाप्रबंधक (रा.भा.) को प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया। कोरोना की वजह से इस बार यह प्रतिष्ठित शील्ड बैठक में प्रदान न करके कार्यालय में नराकास के वरिष्ठ पदाधिकारियों द्वारा कार्यालय में ही प्रदान की गई व लगातार सातवें वर्ष प्राप्त हुई इस शील्ड को कोलकाता कार्यालय के श्री ए रॉयचौधुरी, मुख्य महाप्रबंधक (कोलकाता कार्यालय), श्री बी के दास, उप महाप्रबंधक (सामग्री), श्री जयंत दास, उप महाप्रबंधक (वि.एवं ले.) श्री सुशांत बोरा, उप महाप्रबंधक (प्रशा.) तथा डॉ. वी एम बरेजा, उप महाप्रबंधक (रा.भा.) द्वारा ससम्मान ग्रहण किया गया । इस अवसर पर श्री चौधुरी ने कोलकाता द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार प्रसार के लिए किए जा रहे प्रयासों की चर्चा की तथा हिंदी के बेहतर कार्यान्वयन के लिए अपनी प्रतिबद्धता को भी दोहराया।

विश्व हिंदी दिवस पर ऑयल इंडिया पाइपलाइन मुख्यालय में ऑनलाइन हिंदी कार्यशाला

ऑयल इंडिया लिमिटेड के पाइपलाइन मुख्यालय में विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर ऑनलाइन हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें पाइपलाइन मुख्यालय, कोलकाता कार्यालय तथा केजीबीबीईपी कार्यालय के अधिकारियों तथा कर्मचारियों ने भाग लिया। कार्यशाला "तकनीक का मिलेगा साथ तो हिंदी में बनेगी बात" विषय पर केंद्रित रही। इस कार्यशाला में ऑयल इंडिया के अधिकारियों तथा कर्मचारियों के अतिरिक्त अन्य सरकारी तथा गैर सरकारी संस्थाओं के हिंदी प्रेमी कार्मिक जुड़े। इस कार्यशाला में बतौर मुख्य अतिथि बदरी यादव, उपनिदेशक (कार्यान्वयन) राजभाषा कार्यान्वयन कार्यालय, गुवाहाटी तथा विशेष वक्ता के रूप में केवल कृष्ण, पूर्व तकनीकी निदेशक, राजभाषा विभाग, भारत सरकार को आमंत्रित किया गया था। कार्यालय का उद्घाटन के. टी. वर्की, कार्यपालक निदेशक (पा.ला.) द्वारा किया गया जबकि श्री अवशीष पाल, मुख्य महाप्रबंधक (केजीबीबीईपी) तथा ए. रॉयचौधरी, मुख्य महाप्रबंधक (कोलकाता कार्यालय) ने शुभाशीर्वाद दिया। कोविड महामारी के चलते यह कार्यशाला वेबैक्स प्लेटफार्म पर आयोजित की गई। कार्यक्रम का प्रारंभ श्री रॉयचौधरी द्वारा अपने विचार प्रस्तुत करने के साथ हुआ।

कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए श्री वर्की ने कहा कि हिंदी अब जन

मानस की भाषा बन चुकी है। हिंदी को जन-जन तक पहुंचाने का जो काम तकनीक की मदद से हो रहा है वह इसके बिना संभव नहीं था। उनका कहना था कि यदि तकनीक साथ मिले तो भाषा की प्रगति तेजी हो सकती है जैसा कि हिंदी भाषा की स्थिति में देखने को मिल रहा है। भारत सरकार ने अपने विभिन्न कार्यालयों को राजभाषा हिंदी में काम करने में सक्षम बनाने के लिए एक सुसंगत नीति बनाई हुई है।

श्री यादव ने राजभाषा हिंदी की प्रगति के लिए भारत सरकार द्वारा किए जा रहे प्रयासों के बारे में प्रतिभागियों को विस्तार से बताया।

ऑयल, राजस्थान क्षेत्र, जोधपुर में कवि सम्मेलन का आयोजन

ऑयल इंडिया लिमिटेड, राजस्थान क्षेत्र, जोधपुर के राजभाषा अनुभाग, मानव संसाधन एवं प्रशासन विभाग द्वारा दिनांक 13 फरवरी, 2021 को ऑयल हाउस, जोधपुर में कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन में देश के प्रतिष्ठित कवियों पद्मश्री सुरेंद्र शर्मा, श्री अरुण जैमिनी, श्री विष्णु सक्सेना, श्री दिनेश बावरा और श्री रोहित शर्मा ने भाग लिया।

ऑयल इंडिया लिमिटेड के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री सुशील चन्द्र मिश्रा, नराकास की अध्यक्षा श्रीमती गीतिका पाण्डेय, मंडल रेल प्रबंधक, जोधपुर, राजस्थान क्षेत्र के कार्यकारी निदेशक श्री सुदीश कुमार सिंह की उपस्थिति में हंसी की एक शाम आयोजित की गई। कार्यक्रम में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग हेतु सभी कार्मिकों का राजभाषा अनुभाग हृदय से आभारी है एवं उन्हें उनके सहयोग के लिए अपना हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित करता है।

ऑयल इंडिया लिमिटेड, दुलियाजान द्वारा विश्व हिन्दी दिवस का अनुपालन

ऑयल इंडिया लिमिटेड, क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान द्वारा दुलियाजान गर्ल्स कॉलेज परिसर में बड़े ही हर्षोल्लास के साथ विश्व हिंदी दिवस का अनुपालन किया गया। दुलियाजान गर्ल्स कॉलेज के उपाध्यक्षा श्रीमती सुजाता बरकटकी की अध्यक्षता में आयोजित उक्त समारोह में ऑयल इंडिया लिमिटेड के श्री त्रिदीब सैकिया, महाप्रबंधक - जन संपर्क (विभागाध्यक्ष), श्री हरेकृष्ण बर्मन, उप-महाप्रबंधक (राजभाषा) उपस्थित थे। कार्यक्रम के शुरुआत में दुलियाजान गर्ल्स कॉलेज के हिंदी विभाग के विभागाध्यक्ष श्री अमृत चन्द्र कलिता ने कार्यक्रम में उपस्थित सभी गणमान्य व्यक्तियों के साथ-साथ सभी छात्राओं का स्वागत किया।

श्री हरेकृष्ण बर्मन, उप-महाप्रबंधक (राजभाषा), ऑयल ने समारोह में उपस्थित सभी अतिथियों एवं छात्राओं का स्वागत किया। उन्होंने अपने स्वागत भाषण में विश्व हिंदी दिवस के इतिहास पर रोशनी डाली तथा विश्व हिंदी दिवस के अनुपालन के उद्देश्य के बारे में अवगत कराया। समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित श्री त्रिदीब सैकिया, महाप्रबंधक- जन संपर्क (विभागाध्यक्ष), ऑयल ने विश्व हिंदी दिवस पर प्रकाश डाला। साथ ही साथ उन्होंने यह भी कहा कि भाषा ज्ञान मनुष्य के लिए बहुत ही आवश्यक है। संसार के किसी भी कोने में जाने के लिए भाषा का ज्ञान होना जरुरी है। समारोह में अध्यक्ष के रूप में उपस्थित दुलियाजान गर्ल्स कॉलेज के उपाध्याक्षा श्री सुजाता बरकटकी ने विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित इस समारोह के लिए ऑयल इंडिया लिमिटेड के प्रबंधन की भूरि-भूरि प्रशंसा की और आगे भी इसी तरह का कार्यक्रम करने के लिए अनुरोध किया।

उक्त संपूर्ण समारोह ऑयल इंडिया लिमिटेड, क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान एवं दुलियाजान गर्ल्स कॉलेज, दुलियाजान के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित किया गया। इस अवसर पर छात्राओं के बीच आशुभाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया और सभी छात्राओं ने प्रतियोगिता में बढ़-चढ़कर भाग लिया। विजयी प्रतिभागियों को गणमान्य व्यक्तियों के करकमलों से आकर्षक पुरस्कारों से पुरस्कृत किया गया। पुरस्कार वितरण समारोह का संचालन श्री दिंगत डेका, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक ने किया। श्री पुर्णकांत महंत, विभागाध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग, दुलियाजान गर्ल्स कॉलेज के धन्यवाद ज्ञापन से समारोह का समापन हुआ।

क्या आप जानते है....

- 10 साल में हिंदी भाषी 10 करोड़ बढ़े
- 5 साल में दक्षिण में हिंदी सीखने वाले 22% बढ़े
- शब्दकोश में शब्द 20 हजार से बढ़कर 1.5 लाख हो गए
- इंटरनेट में हिंदी 94% की दर से बढ़ रही है
- 68% लोगों ने हिंदी पर दिखाया भरोसा

ऑयल इंडिया लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम)
Oil India Limited
(A Government of India Enterprise)

आइए
कोरोना वायरस
कोविड-19
की चेन को तोड़े

कोविड-19 संबंधी आवश्यक नियमों का पालन करें,
खुद को तथा दूसरों को सुरक्षित रखें !

सुरक्षित रहने के लिए आप क्या कर सकते हैं

- सरकारी दिशा निर्देशों के अनुसार पात्र होने पर टीका लगवाएं
- हर समय मास्क पहनें। सरकारी आदेशानुसार मास्क नहीं पहनने पर 1000 रूपए जुर्माना भरना होगा
- साबुन या अल्कोहलयुक्त सैनिटाइज़र से हाथ धोने का अभ्यास करें
- अत्यधिक भीड़-भाड़ में भाग लेने से बचें और सामाजिक दूरी बनाए रखें
- यदि आप अस्वस्थ महसूस करते हैं अथवा बुखार, खांसी, सांस लेने में कठिनाई आती है तो चिकित्सक के साथ परामर्श करें।

जनहित में जारी